हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

घर बैठे गिरिराज पाइये

आप गिरिराज के आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं तो 1500 **रुपये** का बैंक ड्राफ्ट **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला**-2 के पक्ष में बनाएं व इसे गिरिराज कार्यालय में भेजें। यदि आप वार्षिक सदस्य बनना चाहते हैं तो 140 रुपये का बैंक ड्राफ्ट या एम. ओ. **सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला**-171005 के नाम से भेजें। पते में पिन कोड एवं दूरभाष या मोबाइल नं. लिखना न भूलें।

डाक पंजीकरण संख्या

एच.पी./42/एस.एम.एल. 2012-14

साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/बागबानी/विकास...5, आस्था/ संस्कृति/ विविध...6, विविध...7, साहित्य...8, महिला/ बाल जगत/स्वास्थ्य ...9, पहाड़ी पृष्ठ...10

वर्ष 34 अंक 18 शिमला, 1-7 फरवरी, 2012 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपये वार्षिक 140 रुपये आजीवन 1500 रुपये website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

ग्रामीण क्षेत्रों में नियुक्त होंगे 2000 जल रक्षक

मानदेय भी 750 से किया 1350 रुपये

हिमाचल प्रदेश ने पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति के 41 वर्ष पूरे कर 42वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला था। राज्य स्तरीय पूर्ण राज्यत्व दिवस मण्डी जिला के सुन्दर नगर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा पुलिस के जवानों, होम गार्ड तथा एन.सी.सी. द्वारा प्रस्तुत किये गये भव्य मार्चपास्ट की

- सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग में भर्ती होंगे 100 कनिष्ठ अभियन्ता।
- मुख्य मंत्री ग्राम पथ परिवहन योजना के तहत नकद प्रोत्साहन।

सलामी ली। उप-पुलिस अधीक्षक श्री कुलभूषण वर्मा ने परेड का नेतृत्व किया।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए कहा कि वर्ष 1971 से अपनी यात्रा आरम्भ कर आज हिमाचल प्रदेश केवल पर्वतीय क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि देश के अन्य राज्यों के लिए भी विकास का आदर्श बना है। राज्य की प्रति व्यक्ति आय, राज्य सकल घरेलू उत्पाद एवं साक्षरता दर जैसे विकास सूचक आज भी देश में सर्वश्रेष्ठ हैं। प्रति व्यक्ति आय जो वर्ष 1971 में मात्र 651 रुपये थी, वर्ष 2011 में बढ़कर 18,493 रुपये हो गई है तथा राज्य सकल घरेलू उत्पाद 223 करोड़ रुपये से बढ़कर 52,426 करोड़ रुपये है। राज्य की साक्षरता दर आज 83.8 प्रतिशत है, जबकि यह वर्ष 1971 में मात्र 23 प्रतिशत थी।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल मण्डी जिला के सुन्दरनगर में आयोजित राज्य स्तरीय पूर्ण राज्यत्व दिवस के अवसर पर परेड की सलामी लेते हुए।

मुख्य मंत्री ने कहा कि गत चार वर्षों के दौरान विभिन्न विकास सूचकों में राज्य के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए दिए गए 52 पुरस्कार राज्य में हुए समग्र विकास को दर्शाते हैं।

इस उपलक्ष्य पर मुख्य मंत्री ने घोषणा की कि ग्रामीण क्षेत्रों में जल आपूर्ति योजनाओं के रखरखाव के लिए 2000 जल रक्षक तैनात किए जाएंगे। उन्होंने जल रक्षकों के मानदेय को 750 रुपये से बढ़ाकर 1350 रुपये प्रतिमाह करने का भी ऐलान किया। इससे प्रदेश में 4220 जल रक्षक लाभान्वित होंगे।

उन्होंने घोषणा की कि प्रदेश की बस्तियों और खेतों को बेहतर जलापूर्ति सुनिश्चित बनाने के उद्देश्य से सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग में 100 कनिष्ठ अभियन्ताओं की नियुक्ति की जाएगी।

उन्होंने मण्डी में जिमनेजियम हॉल के लिए 14.40 लाख रुपये, पावंटा साहिब के बद्री नगर इंडोर स्टेडियम के लिए 36.33 लाख रुपये, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला मोहरी जिला मण्डी के स्टेडियम के लिए 15 लाख रुपये, पालमपुर के विक्रम बत्रा स्टेडियम में हाई मास्ट लाईटें लगाने के लिए 6.86 लाख रुपये टाउन हॉल मण्डी के लिए 25 लाख रुपये, घुमारवीं के छैहर में कुश्ती स्टेडियम के लिए 12.17 लाख रुपये राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला करसोग में स्टेडियम के लिए 25 लाख रुपये, नाहन के छमोहा मैदान में चार दीवारी के लिए 20 लाख रुपये, कुल्लू के ढालपुर में आउटडोर खेल परिसर के लिए दस लाख रुपये, जुब्बल में स्टेडियम के लिए 5 लाख रुपये, नाहन

पूर्ण राज्यत्व दिवस समारोह आयोजित

में शूटिंग रेंज के लिए 15 लाख रुपये, धर्मशाला में सिंथेटिक ट्रैक के लिए 94 लाख रुपये, खेल परिसर धर्मशाला के लिए 90.06 लाख रुपये, ऊना, शिमला व धर्मशाला में वालीटेरा फलैक्स फ्लोरिंग के लिए 16.68 लाख रुपये, रोहड़ू में इंडोर स्टेडियम के लिए 1 करोड़ रुपये तथा हमीरपुर में सिंथेटिक ट्रैक के लिए 1.22 करोड़ रुपये देने की घोषणा की।

मुख्य मंत्री ने मण्डी जिला में राजकीय माध्यमिक पाठशाला बांदली को राजकीय उच्च विद्यालय, राजकीय माध्यमिक पाठशाला धरांडा को राजकीय उच्च पाठशाला और राजकीय उच्च पाठशाला पौड़ी, कोठी, मलोह को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला के रूप में स्तरोन्नत करने की घोषणा की। मुख्य मंत्री ने मिनी सचिवालय सुन्दरनगर के लिए 83 लाख रुपये, सुन्दरनगर में एचआरटीसी वर्कशाप के लिए 50 लाख रुपये और एकीकृत आवासीय एवं मलिन बस्ती विकास कार्यक्रम (शेष पृष्ठ 11 पर)

'हर गांव की कहानी' योजना को मिली राष्ट्रीय ख्याति

राज्य की उपलब्धियों में उस समय एक और उपलब्धि जुड़ गयी, जब 19 जनवरी, 2012 को बैंगलुरु में सम्पन्न हुए 'इंडिया इंटरनेशनल टूरिज्म एण्ड ट्रैवल ट्रेड' में पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग द्वारा ग्रामीण पर्यटन विकास के लिए आरम्भ की गई 'हर गांव की कहानी' योजना के लिए राज्य को 22वां राष्ट्र स्तर का पुरस्कार प्रदान किया गया। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने यह जानकारी दी।

मुख्य मंत्री ने बैंगलुरु में आयोजित प्रतिष्ठित ट्रेड में एक अन्य पुरस्कार प्राप्त करने के लिए पर्यटन एवं नागरिक उड्डयन विभाग को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस (शेष पृष्ठ 11 पर)

ग्रामीण सड़कों के निर्माण के लिए विश्व बैंक ने स्वीकृत किये 74.24 करोड़

विश्व बैंक ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में 37 सड़कों व पुलों के लिए 74.24 रुपये की राशि उपलब्ध करवाने को स्वीकृति प्रदान की है। यह जानकारी मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री जय राम रमेश से प्राप्त सूचना के उपरांत दी।

मुख्य मंत्री ने केन्द्रीय मंत्री का इस मामले को भारत सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के सचिव के नेतृत्व में गठित अधिकार प्राप्त कमेटी के समक्ष उठाने तथा विश्व बैंक को वित्त पोषण के लिए अनुमोदित करने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने केन्द्र सरकार के माध्यम से विश्व बैंक से प्रदेश की 37 सड़कों व पुलों के निर्माण के लिए धनराशि उपलब्ध करवाने का आग्रह किया था, जिसके अन्तर्गत हमीरपुर अंचल में 10 परियोजनाएं, शिमला अंचल में 9 परियोजनाएं, मण्डी अंचल में 7 परियोजनाएं तथा कांगड़ा अंचल में 11 परियोजनाएं शामिल हैं। यह राशि अम्ब खण्ड के रिपोह मिसरन और ऊना जिले के गगरेट खण्ड के थथाल से नाकी, कलोह गांव के लिए लिंक रोड़, सुंकाली से नकरोह, भडरेक, दयोली और मावा कोहालां और फतेहपुर खण्ड के भलां से धुंधी व ऊना खण्ड के नगरोली, जो हमीरपुर लोक निर्माण क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, में इन सड़कों के निर्माण पर व्यय की जाएगी। शिमला अंचल के तहत 9 परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं, जिनमें निरमण्ड खण्ड के अवेरा (दियोमिनिया) और सिरमौर जिले के नाहन खण्ड के बरोग से धार क्यारी, पावंटा खण्ड के पुरूवाला, मानल और सतौन, शिलाई खण्ड के झाखंदों शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि मण्डी अंचल के लिए स्वीकृत सात परियोजनाओं में कुल्लू जिले के नेरी- काथी कुलारी सड़क पर पिछलीहार, फोजल काथी में पुल का निर्माण, नग्गर खण्ड के अन्तर्गत क्लब हाउस से मनाली से गोधल सांग से बुरवा सड़क, गुसाल बुरवा से मझाछ (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्य मंत्री ने पदमश्री विजेता विजय शर्मा को दी बधाई

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने भाषा एवं संस्कृति विभाग के कलाकार एवं जिला भाषा अधिकारी श्री विजय शर्मा, जो भूरि सिंह संग्रहालय चम्बा में कार्यरत हैं, को गणतंत्र दिवस के अवसर पर पदमश्री पुरस्कार प्राप्त करने के लिए बधाई दी है। उन्होंने कहा कि श्री विजय शर्मा का इस उपलब्धि पर प्रत्येक हिमाचली गौरवान्वित हुआ है। मुख्य मंत्री ने कला के क्षेत्र में श्री विजय शर्मा के योगदान की सराहना की।

हिमाचल सर्वश्रेष्ठ ग्रीष्मकालीन पर्यटक गंतव्य

हिमाचल प्रदेश को देश के पसंदीदा ग्रीष्मकालीन गंतव्य का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। वर्ष 2011 में आउटलुक ट्रैवलर पत्रिका ने नीलसन कम्पनी के साथ किए गए देशव्यापी सर्वेक्षण में हिमाचल प्रदेश को सर्वश्रेष्ठ ग्रीष्मकालीन गंतव्य के रूप में चुना है। यह सर्वेक्षण देश भर में किया गया जिसके अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र से जुड़ीं 18 विभिन्न श्रेणियों को लेकर उपभोक्ताओं की पसंद को जाना गया जिनमें होटल, हवाई सेवा और पर्यटक गंतव्य आदि शामिल किए गए।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों यह जानकारी दी कि प्रदेश का पर्यटन उद्योग (शेष पृष्ठ 11 पर)

प्रदेश में धूमधाम से मनाया गया गणतंत्र दिवस

शिमला के रिज मैदान पर आयोजित राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस के अवसर पर परेड की सलामी लेते हुए राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह।

63वां गणतंत्र दिवस गत 26 जनवरी को पूरे प्रदेश में धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जिला, उप-मण्डल व तहसील स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रदेश भर में आयोजित इन समारोहों में ध्वजारोहण, भव्य परेड तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहे।

राज्य स्तरीय समारोह ऐतिहासिक रिज मैदान पर आयोजित किया गया। राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह ने राष्ट्र ध्वज फहराया तथा पुलिस, आई.टी.बी.पी., होमगार्ड, सेना, एन.सी.सी, पूर्व सैनिकों, स्काउट्स और एनएसएस द्वारा प्रस्तुत भव्य परेड की सलामी ली।

2/8 गोरखा रैजिमैंट के मेजर जगमीत सिंह ने परेड का नेतष्टत्व किया।

राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की झांकियां समारोह का मुख्य आकर्षण रहीं। इस अवसर पर प्रदेश के विभिन्न हिस्सों व अन्य राज्यों से बुलाए गए सांस्कृतिक दलों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल, हिमाचल प्रदेश विधानसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती विद्या स्टोक्स, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री कौल सिंह, विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, नगर निगम शिमला की महापौर श्रीमती मधु सूद, मुख्य सचिव श्रीमती राजवंत संधू, पुलिस महानिदेशक डॉ. डी.एस.मन्हास, विभिन्न बोर्डों एवं निगमों के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता, स्वंतत्रता सेनानी, शहर के गणमान्य व्यक्ति तथा नागरिक, पुलिस व सेना के वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

जिला चम्बा

हिमाचल प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री तुलसी राम ने चम्बा में आयोजित गणतंत्र समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों में चम्बा जिले में समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण एवं उत्थान पर 39.29 करोड़ रुपये व्यय किए गए। जिले में 22,533 व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्रदान की जा रही है।

उन्होंने कहा कि जिले में भेड़पालक समृद्धि योजना के तहत 2022 भेड़ पालक लाए गए तथा दूध गंगा योजना के अंतर्गत 386 दुधारु पशु वितरित किए गए।

विधायक सर्वश्री बी.के. चौहान और कुलदीप सिंह पठानिया, पूर्व मंत्री श्री मोहन लाल, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र चौहान, पूर्व विधायक श्री गन्धर्व सिंह, उपायुक्त श्री शरभ नेगी व अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

शिमला में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

जिला कांगड़ा

लोक निर्माण मंत्री ठाकुर गुलाब सिंह ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए लोगों को गणतंत्र दिवस की बधाई दी।

निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री डॉ. लोबसांग सांगे इस अवसर पर विशेष अतिथि थे।

ठाकुर गुलाब सिंह ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश के दूर-दराज के गांवों को सड़क सुविधा प्रदान करने को प्राथमिकता प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों में राज्य में 960 गावों को सड़कों से जोड़ा गया, 3228 कि.मी. नई सड़कें निर्मित की गयीं और 260 पुल बनाए गए। जिला कांगड़ा में सड़क एवं पुल निर्माण पर 500 करोड़ रुपये व्यय किए गए, जबकि दूर-दराज के 181 गांवों कों सड़क सुविधा प्रदान की गयी।

इससे पूर्व, लोक निर्माण एवं राजस्व मंत्री ने शहीद स्मारक पर जाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जिला मण्डी

शिक्षा मंत्री श्री ईशवर दास धीमान ने जिला स्तरीय समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि राज्य सरकार ने सभी सरकारी स्कूलों में पहली से दसवीं कक्षा तक के छात्रों को वर्ष में दो बार निःशुल्क यूनिफार्म प्रदान करने के लिए 'अटल स्कूल यूनीफार्म योजना' आरंभ करने का निर्णय लिया है, जिस पर प्रति वर्ष 65 करोड रुपये खर्च किए जायेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कुल बजट का 19 प्रतिशत शिक्षा क्षेत्र पर खर्च किया जा रहा है तथा इस वर्ष शिक्षा क्षेत्र के लिए 3164.54 करोड़ रूपये का बजट प्रावधान किया है जो कि गत वर्ष की तुलना में 597.54 करोड रूपये अधिक है।

समारोह में वित्तयोग के अध्यक्ष एवं विधायक श्री दिले राम, विधायक श्री अनिल शर्मा, मिल्कफैड के अध्यक्ष श्री मोहन जोशी, नागरिक आपूर्ति निगम के उपाध्यक्ष श्री राम स्वरूप शर्मा, जिला परिषद के अध्यक्ष श्री खीरामणी, पूर्व विधायक श्री कन्हैया लाल ठाकुर, नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती सुशीला सौंखला, उपायुक्त श्री देवेश कुमार, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री हीरा सिंह ठाकुर, सहित गणमान्य व्यक्ति व अधिकारी भी उपस्थित थे।

जिला हमीरपुर

सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्री रविन्द्र सिंह रवि ने सुजानपुर में आयोजित जिला स्तरीय समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश में मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल के नेतृत्व में गत चार वर्षों की अवधि में हिमाचल आदर्श राज्य बन कर उभरा है। उन्होंने कहा कि हमीरपुर जिला में इस वित्त वर्ष में पेयजल, सिंचाई एवं सीवरेज योजनाओं पर 58.00 करोड़ रूपये व्यय किये जा रहे हैं। जिला में 2122.96 हैक्टेयर भूमि में सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने के लिये 25 सिंचाई योजनाओं का कार्य प्रगति पर है।

श्री रवि ने कहा कि हमीरपुर जिला में लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने के लिये गत चार वर्षों में 24 करोड़ 42 लाख रूपये की लागत से 78 जलापूर्ति योजनाएं शुरू की गई हैं जो निर्माण के विभिन्न चरणों में हैं। जिले में वर्षा जल संग्रहण के लिये 635.95 लाख रूपये व्यय कर 89332 घन मीटर क्षमता के 80 जल संग्रहण भण्डार तैयार किये हैं तथा 27647 घन मीटर क्षमता के 38 भण्डारण का कार्य प्रगति पर है।

इस अवसर पर विधायक उर्मिल ठाकुर और श्री बलदेव शर्मा, कांगडा केन्द्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष श्री रसील सिंह मनकोटिया, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री देश राज शर्मा, उपायुक्त श्री राजेन्द्र सिंह तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जिला कुल्लू

बागवानी मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जिले में बागवानी तकनीकी मिशन के अंतर्गत बागवानों को अब तक 9.21 करोड़ रुपये का अनुदान दिया गया है। मिशन के तहत वित्त वर्ष में जिले के लिए 2.15 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। पतलीकूहल में 1.65 करोड़ रुपये की लागत से सेब की अत्याधुनिक ग्रेडिंग व पैकिंग मशीन स्थापित की गयी है।

इस अवसर पर भाजपा अध्यक्ष एवं विधायक श्री खिमी राम शर्मा, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष सुश्री धनेश्वरी ठाकुर, पूर्व विधायक श्री चन्द्रसेन ठाकुर, नगर परिषद अध्यक्ष श्री ऋषभ कालिया, उपायुक्त श्री बी.एम. नांटा, पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक दुल्लर और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

जिला बिलासपुर

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमेश धवाला ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राज्य नागरिक आपूर्ति निगम ने गत अप्रैल, 2011 से दिसम्बर 2011 के दौरान 957.54 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में 44.13 करोड़ रुपये अधिक है। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत प्रदेश के 16 लाख 31 हजार 804 राशनकार्डधारकों को 4634 उचित मूल्य की दुकानों से खाद्यान्न वितरित किए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि जिला बिलासपुर में वर्ष 2011-12 में सामाजिक सुरक्षा पेंशन के 1594 नए मामले स्वीकृत किए गए। जिले में वर्तमान में कुल 19923 व्यक्ति सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्राप्त कर रहे हैं।

जिला सिरमौर

जिला सिरमौर के मुख्यालय नाहन में आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वास्थ्य मंत्री डॉ. राजीव बिन्दल ने कहा कि प्रदेश में अटल स्वास्थ्य सेवा योजना रोगियों को तुरंत राहत पहुंचाने में सफल रही है। राज्य में अब तक लगभग एक लाख मरीजों को इसके तहत त्वरित सहायता दी गयी है। सिरमौर जिला में इस योजना के अंतर्गत 11 ऐम्बुलैंस के माध्यम से 10565 रोगी लाभान्वित हुए हैं।

उन्होंने कहा कि सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार और स्वावलम्बन राज्य सरकार की प्राथमिकताएं हैं। सिरमौर जिले में गत चार वर्षों में 95 करोड़ रुपये व्यय कर 234 कि.मी. सड़कें निर्मित की गयीं और 6 पुल बनाए गए। जिले की 222 पंचायतों के 715 गावों को सड़कों से जोड़ दिया गया है तथा शेष 6 पंचायतों को भी शीघ्र ही सड़क सुविधा मिल जाएगी। कुमारहट्टी-नाहन स्टेट हाई-वे का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिस पर 170 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं ताकि सिरमौर व सोलन जिलों के निवासियों सहित पर्यटकों को भी बेहतर सड़क सुविधाएं मिल सकें ।

जिला ऊना

ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री जयराम ठाकुर ने समारोह की अध्यक्षता करते हुये कहा कि ऊना जिला प्रदेश के मुख्य औद्योगिक क्षेत्रों में से है तथा जिले के टाहलीवाल, मेहतपुर, गगरेट और अम्ब को सफल औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया है। जिले में वर्तमान में 2019 औद्योगिक इकाइयां हैं, जहां 13999 लोगों को रोजगार उपलब्ध है। इनमें से 11825 हिमाचली हैं। इन इकाइयों में 1010 करोड़ रुपये का निवेश हुआ है।

उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों में ऊना जिले में 870.685 लाख रूपए की लागत से इंदिरा आवास योजना के तहत 1942 आवास और अटल आवास योजना के तहत 339.17 लाख की लागत से 802 आवास निर्मित किए गए।

मुख्य संसदीय सचिव सर्वश्री सतपाल सिंह सत्ती और वीरेन्द्र कंवर, गगरेट के विधायक श्री बलबीर सिंह चौधरी, जिला परिषद अध्यक्ष सुश्री रानी रणौत, पूर्व सांसद श्री रणजीत सिंह, अतिरिक्त दण्डाधिकारी श्री राकेश शर्मा, उपमंडलाधिकारी श्री प्रदीप ठाकुर, पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष श्री बलबीर बग्गा और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

जिला सोलन

परिवहन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश के चार शहरों शिमला, सोलन, नाहन तथा मण्डी में 'राजीव आवास योजना' आरंभ की जा रही है। इस योजना के तहत यहां सीवरेज, ड्रेनेज, खेल मैदानों, पार्किंग सुविधाओं का निर्माण, यातायात व्यवस्था और सम्पर्क मार्गों का निर्माण किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ परिवहन योजना आरंभ की है जिसके तहत प्रथम चरण में 150 पथ चुने गए हैं। यहां 29, 22 और 17 सीटर बसें चलाई जाएंगी। इस योजना से बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

सांसद प्रो. वीरेन्द्र कश्यप, विधायक सर्वश्री डॉ. राजीव सैजल और गोबिन्द शर्मा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

जिला किन्नौर

जिला किन्नौर के मुख्यालय रिकांगपिओ में समारोह की अध्यक्षता उपायुक्त किन्नौर डॉ. सुनील चौधरी ने की। इस अवसर पर उन्होंने जिले में हुए विकास का विस्तृत ब्यौरा दिया।

विधायक श्री तेजवंत सिंह नेगी, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती प्रियंका नेगी, पुलिस अधीक्षक श्री अशोक कुमार तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

केलांग

उपायुक्त श्री राजीव शंकर ने केलांग में आयोजित गणतन्त्र समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जनजातीय उप योजना के अंतर्गत इस वित्त वर्ष में लाहौल-स्पीति जिले के लिए 69 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसमें से 39 करोड़ 3 लाख रुपये लाहौल मंडल में विभिन्न विकास गतिविधियों के लिए आबंटित किए गए हैं।

काज़ा

उपमण्डलाधिकारी श्री हिमिस नेगी ने काज़ा में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

धर्मपुर क्षेत्र में सड़क तथा पुलों के निर्माण पर 269 करोड़ रुपये व्यय

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि धर्मपुर विधानसभा क्षेत्र में गत चार वर्षों में सड़क तथा पुलों के निर्माण पर 269 करोड़ रुपये व्यय किए गए। मुख्यमंत्री गत दिनों मण्डी जिले के सरकाघाट उपमण्डल के कोहना-डोडन-का-थला में विशाल जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पूर्व उन्होंने सोन खड्ड पर सयाथी अब्बल से काल स्वाई तक 638.24 लाख रुपये की अनुमानित लागत से किए जाने वाले बाढ़ नियंत्रण कार्य, पिपली में 97.31 लाख रुपये की लागत से निर्मित की जाने वाली उठाऊ सिंचाई योजना पिपली की आधारशिला रखी। इस योजना से सजाओ पिपलु ग्राम पंचायत के किसान लाभान्वित होंगे। उन्होंने 61.48 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाली उठाऊ सिंचाई योजना पारछू का शिलान्यास भी किया। इससे क्षेत्र के किसान लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि सतयार खड्ड पर 98.95 करोड़ रुपये काण्डापत्तन-जरेड़ा माध्यम सिंचाई योजना पर 85.52 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं, जबकि सीर खड्ड के जाखू से आगे के तटीकरण कार्य पर 60 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। उन्होंने विश्वास दिलाया कि टीहरा में उप तहसील खोलने के प्रयास किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने घटते लिंग अनुपात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि कन्या के जन्म को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यही हमारी परम्परा भी है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार 'बेटी है अनमोल' योजना के अन्तर्गत दो लड़कियों तक के जन्म पर 5100-5100 रुपये प्रदान कर रही है। सभी गर्भवती महिलाओं को निःशुल्क संस्थागत प्रसव की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष से

अटल यूनिफार्म योजना के तहत साल में दो बार मिलेगी छात्रों को वर्दी

आरम्भ की गई अटल स्कूल यूनिफार्म योजना के तहत पहली से दसवीं कक्षा तक के छात्रों को वर्ष में दो बार यूनिफार्म निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाएगी।

उन्होंने कहा कि राज्य में सड़क नेटवर्क बढ़कर 34 हजार किलोमीटर से अधिक हो गया है। राज्य में चरणबद्ध तरीके से सभी ग्राम पंचायतों को सड़क से जोड़ा जा रहा है। सभी घरेलू उपभोक्ताओं को सस्ती दरों पर बिजली उपलब्ध करवाने के लिए 166 करोड़ रुपये का उपदान प्रदान कर रही है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि रियूर-बरोटी मार्ग को पक्का किया जाएगा तथा धर्मपुर विधानसभा क्षेत्र में सभी सम्पर्क मार्गों का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने टोर कोहला-कमलाह मार्ग के लिए 10 लाख रुपये तथा मोरला में स्टेडियम के निर्माण के लिए 15 लाख रुपये स्वीकृत किए।

मुख्यमंत्री ने जनसभा के उपरांत जनसमस्याएं भी सुनी।

परिवहन एवं शहरी विकास मंत्री तथा स्थानीय विधायक श्री महेन्द्र सिंह ठाकुर ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए एक दिवसीय दौरे के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने रोशो-धनरासि- पपलोग- बसन्तपुर-डली मार्ग को चौड़ा करने के लिए 6.03 करोड़ रुपये स्वीकृत करने पर आभार व्यक्त किया। उन्होंने क्षेत्र में 85 करोड़ रुपये की सिंचाई योजना सहित सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग की अन्य विकास योजनाओं के लिए आभार जताया।

राज्य सभा सांसद श्रीमती बिमला कश्यप ने कहा कि महिलाओं का सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण भाजपा सरकार की प्राथमिकता है। जिला सोलन के दून विधानसभा की विधायक श्रीमती विनोद चंदेल ने पंचायती राज संस्थाओं तथा शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्रीमती बिमला कश्यप तथा सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्री रविन्द्र सिंह रवि, सोलन के दून विधानसभा की विधायक सर्वश्री कर्नल इन्द्र सिंह, श्रीमती विनोद चंदेल तथा विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी और पार्टी के सभी अग्रणी संगठनों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल मण्डी ज़िला के धर्मपुर क्षेत्र के कोहना-डोडन-का-थला में जनसभा के दौरान प्रसन्नचित्त मुद्रा में।

धौलासिद्ध पनविद्युत परियोजना पर जल्द होगा कार्य आरम्भः मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि नादौन के समीप 500 करोड़ रुपये की लागत से 75 मेगावाट क्षमता की धौलासिद्ध पनविद्युत परियोजना का कार्य शीघ्र आरम्भ किया जाएगा। मुख्यमंत्री गत दिनों हमीरपुर जिले के नादौन उपमण्डल के बेला अमतर में 10 लाख रुपये की लागत से निर्मित अम्बेडकर भवन का लोकार्पण करने के पश्चात् एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि अपने पिछले कार्यकाल में ब्यास नदी पर निर्मित होने वाली धौलासिद्ध परियोजना के सर्वेक्षण के साथ-साथ पंडोह और नादौन के बीच अतिरिक्त क्षमता का चिन्हांकन भी किया था। इससे धौलासिद्ध परियोजना के अतिरिक्त तीन अन्य परियोजनाओं का पता चला जिनकी क्षमता 250 मेगावाट है। इन परियोजनाओं के निर्मित होने से क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और विद्युत संबंधी समस्याओं का समाधान भी हो पाएगा। धौलासिद्ध परियोजनाओं का निर्माण कार्य आबंटित कर दिया गया है, जिस पर कार्य शीघ्र आरम्भ कर दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि नादौन में 70 लाख रुपये की लागत से पर्यटन सूचना केन्द्र एवं पार्किंग का निर्माण किया जा रहा है नादौन में 35 लाख रुपये की लागत से रिवर राफ्टिंग केन्द्र की स्थापना की जाएगी, जिससे ब्यास नदी पर साहसिक पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और नादौन की पर्यटन गतंव्य के रूप में भी पहचान बनेगी। अमतर में अटल बिहारी वाजपेयी क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण से खेल गतिविधियों को बढ़ावा मिला है।

उन्होंने कहा कि नादौन क्षेत्र में 146

नादौन में 35 लाख की लागत से स्थापित होगा रिवर राफ्टिंग केन्द्र

करोड़ रुपये की लागत से दो पेयजल तथा सिंचाई योजनाओं का निर्माण प्रस्तावित है, जिसके तहत पेयजल योजना पर 41 करोड़ 42 लाख रुपये तथा सिंचाई योजना पर 104 करोड़ रुपये से अधिक व्यय होंगे। उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों में नादौन विधानसभा क्षेत्र में प्रदेश में सबसे अधिक 243 हैंडपम्प स्थापित किए गए। क्षेत्र में 14 करोड़ 39 लाख रुपये की लागत से शेष सिंचाई योजनाओं पर कार्य चल रहा है तथा 3 करोड़ रुपये की एक अन्य पेयजल योजना का निर्माण भी किया जा रहा है।

उन्होंने शहीद रवींद्र सिंह के नाम पर निर्मित मार्ग को पक्का करने के लिए 5 लाख रुपये देने की स्वीकृति दी। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर 3 करोड़ रुपये की नदी घाटी परियोजना के तहत भूमिहीनों को आजीविका कमाने के उद्देश्य से 70 सिलाई मशीनें वितरित कीं, जिन पर वन विभाग ने 2 लाख रुपये व्यय किए हैं।

मुख्यमंत्री ने इससे पूर्व हमीरपुर के पक्का भरोह में 35 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले शहीद स्मारक का शिलान्यास किया। स्थानीय लोगों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इस स्मारक के लिए पूर्व सैनिक कल्याण निगम द्वारा 25 लाख रुपये की राशि उपलब्ध करवाई जाएगी।

उन्होंने कहा कि बिजली की समस्या के समाधान के लिए 6 करोड़ 46 लाख रुपये की लागत से 'सिस्टम इम्प्रूवमेंट' करवाया जा रहा है, जिससे क्षेत्र में कम वॉल्टेज की समस्या का समाधान होगा।

शिक्षा मंत्री श्री ईश्वर दास धीमान ने अनुसूचित जाति उपयोजना की राशि के सालाना बजट को 11 प्रतिशत से बढ़ाकर 25 प्रतिशत करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

गांव की सुरक्षा व विकास के लिए एलआईसी की 'बीमा ग्राम' योजना

भारतीय जीवन बीमा निगम ने हिमाचल में 1000 'बीमा ग्राम' बनाने का लक्ष्य रखा है ताकि घोषित 'बीमा ग्राम' को निगम की ओर से वित्तीय सहायता दी जा सके। ग्रामीण समाज के उत्थान के लिए यह योजना अत्यन्त हितकारी है। यह जानकारी गत दिनों शिमला के एलआईसी शिमला मण्डल के वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक सतपाल ने दी। 'बीमा ग्राम' बनाने का तरीका बहुत ही सरल है। इसके लिए निगम ने निम्नलिखित शर्तें रखी हैं:

◆ आईआरडीए की परिभाषा के नियमानुसार गांव एक ग्रामीण केन्द्र होना चाहिये।

◆ जनसंख्या कम से कम 1000 होनी चाहिये।

◆ जिस वित्तीय वर्ष में 'बीमा ग्राम' की घोषणा होनी है उस वर्ष उस गांव से कम से कम 100 नवीन पॉलिसियां आनी चाहिये।

◆ चालू वित्तीय वर्ष से पूर्व की गई पालिसियों की Lapsation Ratio 20% से अधिक नहीं होनी चाहिये।

◆ उस गांव के कम से कम 75 प्रतिशत घरों में एक एलआईसी की पालिसी अवश्य होनी चाहिये। यह पॉलिसी घर के किसी भी कमाने वाले सदस्य के जीवन पर हो सकती है।

यदि उपरोक्त शर्तों को कोई भी गांव पूरा करता है तो निगम उस गांव के लोगों की सहायता हेतु हैण्ड पम्प, सौर ऊर्जा, पीने के पानी का टैंक, स्कूल/ग्राम पंचायत के लिए कमरा बनाने का खर्चा उस गांव से उस वित्तीय वर्ष में की गई पॉलिसियों से आने वाली प्रीमियम आय का 25 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिये तथा इस राशि की अधिकतम सीमा 25000 रुपये है।

उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश का हर गांव 'बीमा योजना' घोषित हो ताकि वह गांव/लोग एलआईसी से जुड़कर लाभान्वित हो सकें। अधिक जानकारी के लिए एलआईसी के निकटतम अभिकर्ता/विकास अधिकारी/शाखा कार्यालय से सम्पर्क करें।

चार वर्षों में 800 चिकित्सक नियुक्त

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि गत चार वर्षों में राज्य में 800 से अधिक एमबीबीएस और आयुर्वेदिक चिकित्सक तथा कई विशेषज्ञ नियुक्त किए गए हैं ताकि रोगियों को उनके घरों के समीप श्रेष्ठ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाई जा सके। मुख्य मंत्री गत दिनों जिला हमीरपुर के नादौन उपमण्डल के धनेटा में एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पूर्व उन्होंने जिला हमीरपुर के शीतकालीन प्रवास के तीसरे दिन 49 लाख रुपये की लागत से निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का लोकार्पण किया।

मुख्य मंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र राज्य सरकार की प्राथमिकता है। प्रदेश के आईजीएमसी शिमला तथा डा. राजेन्द्र प्रसाद चिकित्सा महाविद्यालय टांडा में एमबीबीएस की सीटें 115 से बढ़ाकर 200 कर दी गई हैं, जबकि स्नातकोत्तर सीटें 39 से बढ़ाकर 110 की गई हैं। उन्होंने कहा कि दंत चिकित्सा सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य में 73 बीडीएस चिकित्सक नियुक्त किए गए हैं। प्रदेश में मुख्य मंत्री विद्यार्थी स्वास्थ्य योजना सफलतापूर्वक कार्यान्वित की जा रही है। इस कार्यक्रम के दूसरे चरण में 10 लाख छात्रों का स्वास्थ्य जांचा जाएगा।

मुख्य मंत्री ने जसाई और हटोल में आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन के पुनः निर्माण के लिए दस-दस लाख रुपये, क्षेत्र में विभिन्न मुख्य एवं सम्पर्क मार्गों के निर्माण एवं सुधार के लिए 10.18 करोड़ रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में विभिन्न स्वास्थ्य एवं स्कूल भवनों पर 3.10 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं। उन्होंने धनेटा में सामुदायिक केन्द्र के निर्माण के लिए 5 लाख रुपये स्वीकृत किए। उन्होंने कहा कि बसारल में शीघ्र ही कांगड़ा केन्द्रीय सहकारी बैंक की शाखा खोली जाएगी। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, धनेटा शाखा के प्रबन्धक श्री आर.एल. चौहान ने नए खुले प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के लिए 20 चादरें भेंट कीं। भाजपा नेता श्री विजय अग्निहोत्री ने मुख्य मंत्री का स्वागत किया। शिक्षा मंत्री श्री ईश्वर दास धीमान, विधायक श्रीमती उर्मिल ठाकुर तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

फोटोयुक्त मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन

राज्य मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री नरेन्द्र चौहान ने गत दिनों कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रमनुसार प्रदेश के पांच विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों अर्की, नालागढ़, दून, श्री रेणुकाजी (अ.जा.) व शिलाई के लिए मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण का कार्य प्रथम जनवरी, 2012 की अर्हता तारीख के आधार पर पूर्ण हो चुका है और फोटोयुक्त मतदाता सूची-2012 को 20 जनवरी, 2012 को अंतिम रूप में प्रकाशित कर दिया गया है।

श्री चौहान ने कहा कि प्रारूप प्रकाशन के समय इन पांच विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की फोटोयुक्त मतदाता सूचियों में कुल 3,00,209 मतदाताओं के नाम दर्ज थे। पुनरीक्षण के दौरान 13,145 नये मतदाताओं के नाम दर्ज हुए हैं तथा 1,305 मतदाताओं के नाम मृत्यु/स्थान परिवर्तन/दोहरे पंजीकरण आदि के कारण मतदाता सूचियों से अपमार्जित किये गये हैं। इस प्रकार उपरोक्त विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूची-2012 में कुल 11,840 मतदाताओं की बढ़ोतरी हुई है अर्थात इन 5 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की फोटोयुक्त मतदाता सूचियों में अब कुल 3,12,049 मतदाता पंजीकृत हैं, जिसमें 1,64,924 पुरुष तथा 1,47,125 महिलाएं है।

उन्होंने कहा कि इन पांचों विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में पहली बार समस्त मतदाताओं को मतदाता पहचान-पत्र जारी कर शत-प्रतिशत फोटो पहचान-पत्र का लक्ष्य प्राप्त किया जा चुका है। प्रकाशित मतदाता सूचियों का निःशुल्क निरीक्षण सम्बन्धित जिला निर्वाचन कार्यालय/निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (एसडीएम)/सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (तहसीलदार/नायब तहसीलदार) के कार्यालय में अथवा बूथ लेवल अधिकारी के पास उपलब्ध सूचियों से किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि इन पांच विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों अर्की, नालागढ़, दून, श्री रेणुकाजी (अ.जा) व शिलाई की मतदाता सूचियां निर्वाचन विभाग की इंटरनेट वैबसाइट http://ceohimachal.nic.in पर भी उपलब्ध है। कोई भी व्यक्ति इन सूचियों में दर्ज नामों की पुष्टि उपरोक्त बैबसाइट पर कर सकता है। इच्छुक व्यक्ति इन मतदाता सूचियों की पी.डी.एफ. फाइलों फाइलों की सी.डी. 100 रुपये प्रति सी.डी. की दर से मुख्य निर्वाचन अधिकारी, हिमाचल प्रदेश, शिमला के कार्यालय या सम्बन्धित जिला निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय से भी प्राप्त कर सकते हैं।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

ईमानदार व सच्चे दिल वाला व्यक्ति स्वयं को सदा हल्का व तनावमुक्त अनुभव करता है। —*महात्मा गांधी*

हिमाचल के बढ़ते कदम

समृद्धि व स्वावलम्बन की ओर अग्रसर हिमाचल प्रदेश ने गत 25 जनवरी को पूर्ण राज्यत्व के रूप में अपने 41 वर्ष पूरे किए। चार दशकों का यह सफर हिमाचल प्रदेश के लिए विकास की दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण रहा है। हिमाचल प्रदेश 15 अप्रैल, 1948 को अस्तित्व में आया और 25 जनवरी, 1971 को इसे भारतीय गणराज्य का 18वां राज्य बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इसके लिए प्रदेश के लोगों ने एक लम्बा संघर्ष किया। स्व. डा. यशवन्त सिंह परमार जो हिमाचल प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री रहे हैं उन्होंने लोगों का नेतृत्व कर इसमें सक्रिय भूमिका निभाई। जब प्रदेश अस्तित्व में आया तो यहां विकास नगण्य था। लोगों के जीवन में पूर्णराज्य बनने तक थोड़ा सुधार आया परन्तु जब पूर्ण राज्य का दर्जा मिला तो विकास की गति तेज हुई। पूर्ण राज्य प्राप्ति के समय प्रति व्यक्ति आय मात्र 651 रुपये, साक्षरता दर केवल 23 प्रतिशत थी। महिलाओं की साक्षरता दर और भी कम और विकास में कोई विशेष भागीदारी नहीं। फल व कृषि उत्पादन में कोई नाम नहीं। फल उत्पादन मात्र 1.78 लाख टन। स्थितियां बदलीं। प्रयास आरम्भ हुए, विकास की लहर चली और इस प्रदेश की तस्वीर बदली। इस कड़ी में वर्तमान सरकार के शासनकाल में अभूतपूर्व विकास देखने को मिला। आज विकास की यह तस्वीर हम सबके सामने है। गत चार वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में जो विकास हुआ उससे राज्य को राष्ट्रीय स्तर पर अब तक 53 पुरस्कार मिल चुके हैं। ऐसा पहली बार हुआ है और यह उपलब्धि इस प्रदेश के विकासात्मक इतिहास के स्वर्ण पन्नों में अंकित हो गई है। बड़े राज्य भी इस प्रदेश में हो रहे संतुलित एवं समग्र विकास से प्रभावित हुए हैं। प्रतिष्ठित औद्योगिक घराने अब इस प्रदेश में निवेश के लिए लालायित हैं। यह बेहतर अधोसंरचनात्मक सुविधाओं का ही परिणाम है कि प्रदेश के दुर्गम एवं जन जातीय क्षेत्रों में भी बड़ी-बड़ी परियोजनाएं कार्यान्वित हो रही हैं। 'शिक्षा का हब' के रूप में तो यह प्रदेश पहले ही अपनी पहचान बना चुका है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रदेशवासियों को घर-द्वार पर चिकित्सा सुविधा मिल रही है। राजकीय अस्पतालों पर प्रदेशवासियों का पूरा भरोसा है और अटल स्वास्थ्य योजना लोगों के लिए वरदान साबित हुई है। एक और जो बड़ी उपलब्धि इस प्रदेश में देखने को मिल रही है, वह है लड़कियों की शिक्षा और महिलाओं का सशक्तिकरण एवं विकास में भागीदारी। सरकार ने लड़कियों को हर क्षेत्र में प्रोत्साहित करने के लिए अनेक योजनाएं आरम्भ की हैं। महिलाओं की विकास में भागीदारी को प्राथमिकता दी जा रही है। पंचायती राज संस्थाओं में 58 प्रतिशत महिलाओं का प्रतिनिधित्व है और इससे उनकी विकास में भागीदारी एवं सशक्तिकरण सुनिश्चित हुआ है। इस प्रदेश में जो विकास हो रहा है वह एक तरफा नहीं है। एक समग्र विकास की झलक देखने को मिल रही है। समृद्ध संस्कृति को संजोए आधुनिकता के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए यह प्रदेश विकास की जो ऊंचाइयां छू रहा है, इससे आने वाले समय में वास्तव में ही इस प्रदेश की एक अलग पहचान होगी। प्रदेश समृद्ध होगा और सबसे ऊपर भी।

आधुनिकता की दौड़ में पिछड़ता लोक संगीत

लोक संगीत को अब तक मानवीय सभ्यताओं के उद्भव और विकास का आईना माना जाता था, परन्तु अब यह धारणा धीरे-धीरे बदलने लगी है। कुछ साल पहले तक लोक संगीत मानवीय जीवन के हर शोबे में रचा-बसा था। मनोरंजन के साधन जितने कम थे, लोक संगीत का प्रभाव उतना ही अधिक था। अपने फुर्सत के क्षणों में मानव आप-बीती तथा अपने आस-पास घटित बातों को अपने मानस पटल पर उकेरने के बाद शब्दों में ढालने में पारंगत था। फिर मीठी धुनें बनतीं और पूरा समाज उन धुनों पर झूमता-गाता था। वैश्वीकरण की मार, अब न केवल जिन्दगी के अन्य क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष रूप से अनुभव की जा सकती है, पर लोक संगीत पर पड़ने वाले इसके प्रभावों को भी प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा सकता है। खासकर, जब युवा पीढ़ी अपनी सभ्यता और संस्कृति से आए दिन दूर बिदकती जा रही हो। हिमाचली युवाओं को अब अपने विचारों के प्रकटीकरण के लिए अपनी बोली के स्थान पर हिन्दी या अन्य भाषाओं का संगीत अधिक भाता है। ऐसे में स्थानीय संस्कृति या लोक संगीत का क्या हश्र हो सकता है, अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं।

विगत में लोक संगीत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संस्कृति के हस्तांतरण का सशक्त संवाहक था। परन्तु अब समीकरण बदल चुके हैं। कभी आध्यात्मिकता के परिचायक रहे लोक संगीत को अब भजनों की पैरोडी तक सीमित कर दिया गया है। ऋषियों-मुनियों के धार्मिक जीवन को अनुशासित करने वाले मंत्रों तथा सूक्तिओं-ऋचाओं को लोक संगीत का जनक माना जा सकता है। कहा जाता है कि लोक संगीत के माध्यम से ही मंत्रों को स्वर, लय एवं ताल में बांधकर लोगों तक पहुंचाने में मदद मिली। विशेषकर विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और भाषाओं के देश भारत में लोक संगीत के प्रभाव को स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है। ऐसा ही प्रभाव अफ्रीका, एशिया तथा अन्य महाद्वीपों की सभ्यताओं और संस्कृतियों में भी

● **करनैल राणा**

अनुभव किया जा सकता है। कभी प्रकृति और जीवन के हर अंग में बहने वाले लोक संगीत के घटते प्रभाव को अब आसानी से महसूस किया जा सकता है। उदाहरण के लिए देहरा उपमण्डल में ब्यास नदी के बाएं-दाएं तट पर बसे चंबापत्तन में कभी पुल के अभाव में किश्तियां संपर्क साधन थीं, परन्तु अब यहां पुल का निर्माण होने से यहां चलने वाली नोवें बीते जमाने की बात हो जाएंगी। कभी इन्हीं गीतों को गाकर मुझे प्रदेश भर में ख्याति मिली थी। परन्तु आने वाले समय में चंबापत्तन की बेड़ियों से जुड़े लोक गीत भी इसी तरह ताक पर धरे नज़र आएंगे क्योंकि आने वाली पीढ़ियों को, न ही कभी यहां चलने वाली नावों के बारे में पता होगा और न ही यहां पुल के न होने का। ऐसे में इनसे जुड़े लोक गीतों का क्या हश्र होगा, इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। इसी तरह 'घट्टी ओ चढ़ैन्दियां दलेलू मीयां, गर्मी जे लगदी' लोकगीत अतीत के गाल में समा चुका है क्योंकि हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही विकासात्मक योजनाओं से घर-घर तक सड़कों का जाल फैलाने की वजह से अब किसी प्रेयसी को पैदल पहाड़ नहीं चढ़ना पड़ता है, ऐसे तो दलेलू मियां के उसे पंखा करने का प्रश्न ही शेष नहीं बचता।

परन्तु जिन गीतों को अब लोक गायक या लोक गीतकार आधुनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास करते हैं, उन्हें आशातीत सफलता नहीं मिलती। उदाहरण के लिए सागर पालमपुरी द्वारा लिखे गीत 'ओयां वो ललारिया ओ, बोयां वो ललारिया, बैठणे जो दिंगी तिजो पंद' गीत भी अब गाहे-बगाहे ही सुनने को मिलता है। इसी तरह लोक सम्पर्क विभाग से सम्बद्ध प्रसिद्ध लोक गायक प्रताप शर्मा द्वारा रचित और गाया गीत' नाल्ले पार गीतां जो जाणां, विच ब्याहे नचणां गाणां, चा नाचे दा' भी अब काल के गर्त में समा चुके हैं। परन्तु इससे अधिक दुःख होता है उन लोक गीतों के खोने का, जो स्वयं लोगों द्वारा रचे गए थे और समाज के विभिन्न वर्गों के सहयोग के भागी ये लोकगीत अब अपना अस्तित्व खो चुके हैं। इनमें कुछ वीर पुरुषों के कृत्यों को आधार बनाकर लिखी गई बार और गीत भी शामिल हैं। इसी तरह मार्च-अप्रैल माह में जाति विशेष द्वारा गाए जाने वाले 'ढोलरू', सैर के अवसर पर गाए जाने वाले लोक गीत तथा गुग्गा के लोक गीत कई इलाकों में या तो विलुप्त हो चुके हैं या पूर्ण ज्ञान के अभाव में आधे-अधूरे गाए जा रहे हैं।

इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि प्रदेश के वे क्षेत्र, जो अब भी आधुनिकता की चहल-पहल से परे हैं, उनमें लोक गीतों का सृजन अब भी जारी हैं। यहां अब भी किसी घटना को आधार बनाकर लोक गीत रचे जाते हैं। छोटा भंगाल क्षेत्र में आज भी कुछ हद तक इस परम्परा का निर्वहन किया जा रहा है। पर आधुनिकता का ग्रहण यहां भी अपना प्रभाव दिखाना आरम्भ कर चुका है। इसके अतिरिक्त आधुनिक वाद्य यंत्र अब पारम्परिक साजों पर भारी पड़ते जा रहे हैं, जिससे लोक गीतों की महक तथा संगीत की धमक कहीं खोती जा रही है।

परन्तु इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि जीवन में घटित होने वाली नई बातों, विकास और विस्तार को अब हम लोक गीतों में नहीं ढाल पा रहे हैं, जिसके चलते हमारी नई पीढ़ियों को बाहरी दुनिया का ज्ञान भले जन-संचार के माध्यमों से प्राप्त होता जा रहा हो, पर उसे अपनी सभ्यता और संस्कृति के समुद्र में भीगने का मौका नहीं मिल रहा है। अपनी लोक सभ्यता तथा संस्कृति के विकास तथा संरक्षण के लिए हमें अभी से कमर कसनी होगी अन्यथा भविष्य में हमें अपनी सभ्यता तथा संस्कृति की जानकारी डायनासोर की भांति फिल्मों से ही प्राप्त होगी।

जन संसद जन संसद जन संसद

निगम की बसों में महिलाओं के लिए आरक्षण

मैं गिरिराज के माध्यम से प्रदेश के परिवहन मंत्री का ध्यान प्रदेश की परिवहन निगम की बसों में 33 प्रतिशत महिला आरक्षित सीटों के लिए जारी अधिसूचना के व्यवहारिक स्वरूप की ओर दिलाना चाहता हूं। प्रबन्ध निदेशक हिमाचल पथ परिवहन निगम ने नवम्बर, 2007 में पत्रांक (एच.ओ.)-3-3(2)67(15) दिनांक 2.11.2007 के अन्तर्गत ज़िला क्षेत्र में चलने वाली निगम की बसों में 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं को आरक्षण की अधिसूचना जारी कर रखी है। बस के परिचालक को आरक्षित सीटें महिलाओं को उपलब्ध करवाना सुनिश्चित कराया गया है। इस अधिसूचना के चार वर्ष बीत जाने के बाद भी इसे व्यवहारिक रूप से लागू नहीं किया जा रहा। इन आरक्षित सीटों पर कोई भी बैठ जाता है। महिलाएं उन आरक्षित सीटों के पास बच्चों सहित खड़ी भी होती है तो कोई भी बैठने के लिए नहीं कहता और न ही परिचालक इन आरक्षित सीटों पर महिलाओं को बैठाने में अपने दायित्व को निभा रहा। महिलाओं का परिवहन मंत्री से कहना है कि हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम की बसों में आरक्षण दिया ही क्यों जब उसे व्यवहारिक रूप से लागू नहीं किया जा रहा। यों तो महिलाओं के लिए बसों में 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित की गई है। लेकिन आदेशों की पालना के व्यापक प्रबन्ध नहीं है। इसके चलते महिलाओं को आज भी अपने हक के लिए लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ रही है।

दयानन्द धर्मा जरोल (कोटगढ़)

हिमाचली भाषा को उचित दर्जा मिले

गिरिराज हि.प्र. की समृद्ध संस्कृति व समाज का दर्पणमयी उत्कृष्ट साप्ताहिक है। पहाड़ी भाषा हिमाचली ने हिमाचल बनाया पर हिमाचली भाषा को अभी तक संविधान की 8वीं अनुसूची में स्थान नहीं मिल सका है। हि.प्र. सरकार व साहित्य प्रेमियों के प्रयास जारी हैं। गिरिराज, हिमप्रस्थ, विपाशा, हिमाचल मित्र, हिमाचल केसरी व अधिकतर प्रादेशिक दैनिक समाचार पत्र भी इस दिशा में समुचित रूप से प्रयासरत हैं। अगर गिरिराज में हिमाचली भाषा के लिए ज्यादा पृष्ठ किये जायें तो यह कदम भी हिमाचली भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिलाने में एक मील का पत्थर साबित हो सकता है। वास्तव में हि.प्र. की समृद्धि संस्कृति में ऐसा जादू है कि इसकी आभा से वशीभूत अनेकों विदेशी सात समन्दर पार से भी यहां आकर सदा-सदा के लिए यहां के ही हो जाते हैं।

रवि सांख्यान बिलासपुर, हि.प्र.

पेयजल योजना के निर्माण में विलम्ब क्यों?

मैं गिरिराज के माध्यम से प्रशासन का ध्यान अपने तीन गांव के लिए सरकार द्वारा वर्ष 2001-02 में 'नौशल्या खंड से उठाऊ पेयजल योजना' का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया जो अब तक पूर्ण नहीं हुआ। एक दो बार तो स्टोर टैंक पानी के बहाव में बह भी चुका है, इससे सम्बन्धित सभी विभागों को सूचित किया गया तथा पंचायत प्रतिनिधियों, ज़िला परिष्द्, विधायक जी को भी कई बार शिकायत दर्ज करवाई है परन्तु कोई भी सक्रिय कार्य नहीं हुए। यहां पर समस्त ग्रामवासियों को कई मील दूर पानी भरने जाना पड़ता है तथा पशुओं को भी। स्कीम का पानी तीसरे या पांचवें दिन आता है एक बर्तन या आधा। पानी की समस्या यहां पर एक गम्भीर समस्या है। अत: गिरिराज साप्ताहिक शिमला के माध्यम से हमारी पेयजल योजना की समस्या का निवारण करें।

टीकाराम शार्म समस्त ग्रामवासी

हैण्डपम्प की मुरम्मत की जाए

गिरिराज साप्ताहिक के माध्यम से सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का ध्यान ज़िला सोलन के अन्तर्गत आने वाले नगाली पुल जहां पर स्वामी आटो केयर के द्वारा आईशर कम्पनी की वर्कशाप का निर्माण किया गया है। यहां सैंकड़ों की तादाद में लोगों का आना जाना होता है। लेकिन पानी की पर्याप्त व्यवस्था न होने से लोगों को खासी परेशानी झेलनी पड़ती है। हालांकि पुल के साथ सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग ने यहां हैण्ड पम्प स्थापित किया हुआ है। मगर पिछले काफी समय से इस हैण्ड पम्प से गाद युक्त पानी निकल रहा है। जोकि पीने योग्य नहीं है। हालांकि इस बारे में विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को कई बार अवगत किया जा चुका है। लेकिन ये समस्या आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। विभाग के कर्मचारियों ने मात्र औपचारिकता निभाते हुए हैण्डपम्प पर एक बोर्ड टांग दिया जिसके ऊपर लिखा है :'ये पानी पीने योग्य नहीं है' मगर इसकी मरम्मत के बारे में नहीं सोचा जिससे लोगों में रोष व्याप्त है।

आर.के वर्धन सोलन

कृषक मित्र

एकीकृत मशरूम उत्पादन से महिला सशक्तिकरण

● कल्पना आर्य
● सुरेन्द्र ठाकुर
● पंकज सूद

मशरूम का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आया है। मशरूम के लिए भारत की भूमि व जलवायु अनुकूल है। हमारे देश में पहली बार मशरूम उगाने का प्रयत्न चम्बाघाट (सोलन) में अनुसंधान केन्द्र में किया गया था। हमारे देश में मुख्यत: तीन तरह के मशरूम जिनमें खुम्ब, दुधिया मशरूम व ढीगरी मशरूम उगाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में मशरूम उत्पादन दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। मशरूम या खुम्ब एक प्रकार की फंफूदी है। इसकी कुछ प्रजातियां खाने योग्य होती हैं व अन्य प्रजातियां खाने योग्य नहीं होती है वे जहरीली होती हैं। मशरूम पोषक तत्त्वों से भरपूर होते हैं। इन्हें बिना भूमि के घर में ही एक कमरे में उचित तापमान पर उगाया जा सकता है। मशरूम उत्पादन महिलाओं को घर बैठे-बैठे रोजगार प्रदान करने के साथ-साथ उनके खाली समय का सदुपयोग है व उनकी आर्थिकी को सुदृढ़ करने में भी मदद करता है। स्वयं सहायता समूह में महिलायें मशरूम उत्पादन सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करके मशरूम उत्पादन शुरू कर अपना व्यवसाय शुरू कर सकती है। मशरूम उत्पादन सम्बन्धित जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि विश्वविद्यालय/ वानिकी विश्वविद्यालय पालमपुर व

सोलन तथा मशरूम सम्बन्धित विभाग से प्राप्त की जा सकती है। इन संस्थाओं में समय-समय पर किसानों व किसान महिलाओं के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाये जाते हैं अत: प्रशिक्षण लेने के लिए महिलाओं को इन केन्द्रों के सम्पर्क में रहना चाहिये।

पैदावार: मशरूम की पैदावार का समय चक्र बहुत छोटा यानि 50-60 दिन होता है। यदि महिलाओं ने समूह में मशरूम उत्पादन करना हो तो 200 से 250 के करीब थैले रखे जा सकते है आरम्भ में इतने थैले और इसके पश्चात् बाद में थैली की संख्या बढ़ाई जा सकती है। प्रति सप्ताह 40-50 बैग की बीजाई करनी चाहिये व इन्हें इसी क्रम में खोलना चाहिये ताकि नियमित पैदावार मिलती रहे। यदि सभी थैलों में एक साथ बीजाई कर दी जायेगी तो पैदावार एक साथ प्राप्त होती है जिससे विपणन में कठिनायां आती हैं। बीजाई करने के बाद 20 से 25 दिन में मशरूम उत्पादन शुरू हो जाता है। उत्तम प्रबन्धन तथा रोगों से बचाव करके मशरूम की अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

आमतौर मशरूम की निम्न प्रजातियां लगाई जाती हैं

बटन मशरूम
ओयस्टर मशरूम/ डीगरी मशरूम
पैडी स्ट्रा मशरूम
गुद्धी जगली स्पीशीज है।

मशरूम प्रोटीन विटामिन, खनिज तत्त्व इत्यादि का अच्छा स्त्रोत है।

मशरूम में वसा व कोर्बोहाइड्रेटस कम होने के कारण शूगर के मरीजों व अधिक मोटापे वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा खाद्य भोजन है।

ऊर्जा के लिए मशरूम अच्छा स्त्रोत है। (454 ग्राम मशरूम से 120 किलो कैलोरी ऊर्जा मिलती है)

परिरक्षण: मशरूम को सब्जियों के रूप में प्रयोग करने के साथ-साथ हम परिरक्षित कर सकते हैं। मशरूम सामान्य तापमान पर शीघ्र खराब हो जाते हैं क्योंकि वातावरण में खुम्ब को खराब होने/ करने वाले जीवाणु उपस्थित होने के कारण खराब कर देते हैं।

रासायनिक घोल का प्रयोग

मशरूम को खराब होने से बचाने के लिए इसे परिरक्षित घोल में रख सकते हैं। घोल निम्न प्रकार से बनाया जा सकता है:-

पानी: 1 लीटर
सिट्रिक अम्ल : 0.5 प्रतिशत
नमक : 3.0 प्रतिशत
पोटाशियम मेटा : 0.1 प्रतिशत
वाई सल्फाइट

उपरोक्त का प्रयोग करके घोल तैयार कर लिजिये। मशरूम को सबसे पहले 85^0 सेल्सियस तापमान पर गरम पानी में 3 से 5 मिनट तक रखने के बाद ठण्डे पानी में डाल दीजिये। मशरूम को घोल में परिरक्षित करने के लिए कांच के बर्तन में मशरूम व घोल 1:1 की मात्रा में डाल दें व ढककर रख दीजिये। इस घोल में मशरूम को हम लगभग 1 महीने तक सुरक्षित रख सकते हैं।

मशरूम का विपणन व भण्डारण

ताजे मशरूम को 5 से 6 छिद्र वाली 200 ग्राम की बिना रंग वाली (Trans parent) लिफाफे में भरकर बेचा जा सकता है वैसे तो मशरूम की 200 ग्राम की थैली का मूल्य 25-30 रुपये है परन्तु इसका मूल्य बाजार में मशरूम की उपलब्धता पर भी निर्भर करता है। मशरूम का प्रयोग ताजा ही करना चाहिये। मशरूम को फ्रिज में 5^0 से. तापमान पर 4 से 5 दिनों के लिये भण्डारित किया जा सकता है।

एकीकृत मशरूम उत्पादन

आजकल के समय में यदि महिलाओं को अपने घर के कार्य के साथ-साथ अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारना है तो अकेले एक ही चीज का उत्पादन करना हितकर नहीं होगा। आज का समय है एकीकृत खेती करने का। अत: महिलाओं को मशरूम उत्पादन के साथ सब्जियों व अन्य फसलों की खेती भी करनी चाहिये। यदि उत्तम प्रबन्धन व रोगों से बचाव किया जाये तो मशरूम व सब्जी उत्पादन से अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

संरक्षण: मशरूम व सब्जी में पानी की मात्रा अधिक होने के कारण सामान्य तापमान पर इन्हें 24 घण्टे से अधिक नहीं रखा जा सकता है क्योंकि इसमें कुछ परिवर्तन होने लगते हैं। अत: इनका संरक्षण आवश्यक है।

बागबानों के लिए वरदान सेब जीर्णोद्धार योजना

उद्यान विभाग के माध्यम से बागवानों के उत्थान के लिए प्रदेश सरकार ने कई योजनाएं आरम्भ की हैं। इन योजनाओं से कुल्लू जिले के बागवान भी काफी लाभान्वित हो रहे हैं। प्रदेश में बागवानी की रीढ़ माने जाने वाले सेब के उत्पादन में बढ़ौतरी के लिए राज्य सरकार ने 85 करोड़ रूपये की सेब जीर्णोद्धार योजना शुरू की है। यह योजना कुल्लू जिला के सेब बागबानों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। इस योजना का लक्ष्य सेब के पुराने पेड़ों को बदलकर उनके स्थान पर उन्नत किस्म के पौधे लगाना है। इससे सेब उत्पादन बढ़ेगा और बागवानों की आर्थिकी मजबूत होगी। वर्षों पुराने पेड़ों की जगह सेब के नए पौधो लगाने के लिए प्रदेश सरकार बागवानों को सेब जीर्णोद्धार योजना के तहत अनुदान दे रही है। सेब बागवान प्रति पौधा लगभग 43 रुपये तक अनुदान पा सकते हैं। इसी योजना के तहत बगीचा प्रबंधान, पोली लाइनिंग टैंक और बगीचों में फव्वारा सिंचाई सुविधाओं के लिए भी अनुदान का प्रावधाान किया गया है। इसके अलावा बागवानों को प्रशिक्षित करने की व्यवस्था भी इस योजना में की गई है।

शीर्ष कलमबंदी पौधे लगाने तथा पेड़ छत्र प्रबंधन के लिए बागवान प्रति पौधा 43 रुपये तक अनुदान पा सकते हैं। वे अधिकतम 250 पौधे प्रति हैक्टेयर की दर से अनुदान ले सकते हैं। सेब के पौध रोपण के लिए भी प्रति पौधा 36 रुपये सब्सिडी ली जा सकती है। इसकी अधिकतम सीमा 550 पौधे प्रति हैक्टेयर है। बगीचा प्रबंधन के लिए भी प्रति हैक्टेयर 8625 रुपये की वित्तीय मदद की व्यवस्था की गई है। यह सहायता 500 मीटर पाइप और एक एचपी क्षमता वाले पंप के लिए दी जाती है। पोली लाइनिंग टैंक के निर्माण के लिए 260 रुपये प्रति घनमीटर की दर से अनुदान लिया जा सकता है। इसके अलावा बगीचों में फव्वारा सिंचाई सुविधा के लिए भी सेब जीर्णोद्धार योजना के तहत प्रति हैक्टेयर 17,500 रूपये का प्रावधान किया गया है। इस प्रकार प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई सेब जीर्णोद्धार योजना बागवानों के लिए वरदान साबित हो सकती है। इससे वे अपने वर्षों पुराने पेड़ों की जगह उन्नत किस्मों के नए पौधे लगाकर अपनी आर्थिकी मजबूत कर सकते हैं।

● अनिल गुलेरिया

कृषि क्रियाओं से फसलों में पीड़क नियन्त्रण

● डॉ. एस.डी. शर्मा
● जितेन्द्र कुमार

पीड़कनाशी आधुनिक कृषि का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं लेकिन इनके अन्धाधुंध प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषण की विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो गई है। इसके अतिरिक्त कीटों का पुनरुत्थान, रसायनों के प्रति अवरोधता, मित्र कीटों को हानि तथा खाद्य पदार्थों में रसायनों के अवशेषों का रहना इत्यादि समस्याओं में भी वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर हर तरफ से जहर हमारे शरीर में जा रहा है जिससे तरह-तरह की बीमारियां फैल रही है। इसलिए आवश्यक है कि पीड़कनाशी रसायनों के प्रयोग को कम किया जाये तथा फसलों को पीड़कों (कीट, बीमारी व खारपतवार) से बचाने के लिए निम्नलिखित कृषि क्रियाएं अपनायें।

फसल चक्र: साधारणतया फसल चक्र सीमित पोषिता सीमा व विसर्जन वाले कीटों के लिए अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। फसल चक्र का अभिप्राय है कि एक ही प्रकार की फसलों तथा किस्मों को बार-बार एक ही खेत व भूमि पर न लें। यह कीट भुखमरी नियमों पर आधारित कृषि पद्धति है। फसल चक्र अपनाने से टमाटर, आलू व भिण्डी को हानि पहुंचाने वाले पौध परजीवी सूत्रकृमियों का नियन्त्रण हो जाता है जो कि अन्य विधियों से काफी कठिन होता है।

सफाई: खरपतवार नियन्त्रण खाली खेतों में भी उतना ही अनिवार्य है जितना फसल वाले खेतों में क्योंकि इसके कारण कई कीट व बीमारियों के बीजाणु। जीवाणु/विषाणु शरण ले लेते हैं। इसके अतिरिक्त फसलों की कटाई के बाद उनके अवशेष जैसे गिरे हुए पत्ते, पौधे, डालियां व अन्य भाग कई कीटों के लिए शरण प्रदान करते हैं। यदि इन अवशेषों को समाप्त/नष्ट कर दिया जाये तो बैंगन, कद्दू वर्गीय सब्जियां, शकरकन्दी, पत्ता गोभी व फूलगोभी आदि फसलों में वेधक तथा अन्य कीटों का गुणन नहीं हो पाता है। कीट ग्रस्ति टमाटर, करेला, घीया व कद्दू के फलों को यदि एकत्रित करके नष्ट कर दिया जाये तो फल मक्खी द्वारा होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है क्योंकि इनमें फल मक्खी कीट के 'मैगट' विद्यामान होते हैं। कद्दूवर्गीय सब्जियों के जो भाग भूमि को छूते हैं यदि उन्हें हटा दिया जाये तो लाल भूण्डी नामक कीट के गुणन को भी कम किया जा सकता है।

भूमि की जोताई: सर्दियों में लगने वाली सब्जियों की कटाई के पश्चात् अप्रैल व मई के महीनों में गहरा हल चलाने से जमीन में विद्यमान हानिकारक भूण्डियों की 'ग्रब' अवस्थायें भूमि के ऊपर आ जाती है और वे या तो पक्षियों द्वारा खा ली जाती हैं या धूप में मर जाती है। गहरे हल से सफेद लट, आर्मी वर्म तथा बालों वाली सूण्डियों की प्यूपावस्था भूमि के ऊपर आ जाती है और बाद में प्रौढ़ कीटों की संख्या में कमी आ जाती है।

अन्तरवर्तीय: अन्तरवर्तीय फसलें लगाकर कीटों के आस-पास का सूक्ष्मवातावरण उनके लिए हानिकारक हो जाता है तथा उनकी संख्या में कमी आ जाती है।

सिंचाई: यदि पौधों के ऊपर से छिड़काव विधि से सिंचाई की जाये तो फसलों में लगने वाले कीटों की संख्या में कमी आ जाती है। इस तरह से आलू के 'ट्यूबर मौथ' का नियन्त्रण किया जा सकता है। नर्सरी में यदि समय-समय पर फलदार पेड़ों में सिंचाई की जाये तो दीमक का प्रकोप कम हो जाता है। कुछ समय के लिए पानी खड़ा रखा जाये तो कटवर्म सूण्डी उसमें डूबकर मर जाती है।

उर्वरता प्रबन्धन: नत्रजन खाद की अधिक मात्रा से पौधों की वानस्पतिक वृद्धि अधिक होती है तथा वे अधिक नरम व मुलायम हो जाते हैं और कीटों के लिए अधिक आकर्षक होते हैं। अधिक नत्रजन से बैंगन में परोह एवं फल वेधक कीट, टमाटर में फल छेदक, फूलगोभी में तेले तथा भिण्डी में फल छेदक कीट का अधिक प्रकोप होता है। इसके विपरीत फॉसपोरस व पोटाशियम डालने से बैंगन में परोह एवं फल वेधक कीट, सरसों में तेले तथा टमाटर में फल छेदक का प्रकोप कम हो जाता है। पोटाशियम से फसलों में लगने वाली कई बीमरियों के प्रति अवरोधता आ जाती है और उनके प्रकोप में कमी आ जाती है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक खाद से युक्त मृदा, फसल व पौधों के लिए आवश्यक तत्व, सही नमी, हवा और तापमान से स्वस्थ पौधे तैयार करती है जो कि कीट व रोगों को सहने में अधिक सक्षम होते हैं।

कटाई छंटाई: फलों तथा कृषिवानिकी पौधों के लिए समय पर कटाई छंटाई अति आवश्यक है। फल लेने के बाद पौधों की कटाई छंटाई कर दें जिससे कई प्रकार के कीट जैसे छेदक (बोटर) आदि का नियन्त्रण हो जाता है। इसके अतिरिक्त कटाई छंटाई के बाद पौधों में हवा का आवागमन बढ़ जाता है तथा सूर्य का प्रकाश अधिक पड़ने से पौधे कीट व बीमारियों से बच जाते हैं। कटाई छंटाई के बाद जुताई, निराई-गुड़ाई द्वारा खरपतवारों का नियन्त्रण कर सकते हैं जिन पर कीट व बीमारियां पनपती है।

फसल की बीजाई: फसल की बीजाई अगेती व पछेती करने से कीटों व बीमारियों के प्रकोप पर प्रभाव पड़ता है। हिमाचल प्रदेश के मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में यदि मक्की की बीजाई 10 जून के पश्चात् की जाये तो 'कटुवा' सुण्डी का प्रकोप काफी कम हो जाता है। इसी तरह यदि तोरिया की बीजाई अगेती कर दी जाये तो सुरंगी कीट व मरोड़िया रोग आने की अधिक सम्भावना रहती है। मटर की अगेती फसल में तना मक्खी भारी हानि पहुंचाती है।

खेतों में आने वाले सभी कीट हानिकारक नहीं होते हैं। कुछ यदि हानि पहुंचाते हैं तो कुछ परागण में सहायता करते हैं और कुछ हानि करने वाले कीटों को अपना आहार बनाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने खेतों/बागीचों में आने वाले कीटों व बीमारियों आदि का विवरण लिखकर रखें तथा समय-समय पर कृषि विशेषज्ञों व अन्य स्रोतों से उनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें और उसे आपस में बांटे तथा फिर सही ढंग से अपनी फसलों का बचाव करें।

खेतों में आने वाले सभी कीट हानिकारक नहीं होते हैं। कुछ यदि हानि पहुंचाते हैं तो कुछ परागण में सहायता करते हैं और कुछ हानि करने वाले कीटों को अपना आहार बनाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम अपने खेतों/बागीचों में आने वाले कीटों व बीमारियों आदि का विवरण लिखकर रखें तथा समय-समय पर कृषि विशेषज्ञों व अन्य स्रोतों से उनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें।

वसंत पंचमी

भारतीय जीवन दर्शन की प्रतीक सरस्वती

✍ गोपाल जी गुप्त

आदिकालीन आराध्या के रूप में मात्र सरस्वती का ही महत्त्व वैदिक काल से आजतक अक्षुण्ण है। सरस्वती अपने विकास-क्रम में विविध रूप धारण करते हुए कला, साहित्य, ज्ञान, विद्या की देवी, मानव जीवन-दर्शन की प्रणेता-अधिष्ठाता के रूप में प्रतिष्ठित हुई तथा महासरस्वती देवी-मां का स्थान ग्रहण किया। अथर्ववेद में वह ब्रह्मा की पुत्री हैं, कठोपनिषद में शक्ति सम्पन्न सृष्टिकर्त्री, शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति ब्रह्मा से अनुरक्त, सृष्टिकार, जलधारा उत्पत्ति का आदिस्रोत हैं। वैदिक युग में स्वतंत्र सत्ता वाली नारी शक्ति है जिन्हें बाद में ब्रह्माणी, ब्रह्मा की पत्नी बना कर सावित्री भी कहा गया। वेदों में उनका निवास स्वर्ग, अंतरिक्ष तथा पृथ्वी पर क्रमशः भारती, इडा, सरस्वती नाम से वर्णित है। सामवेद में उनका आह्वान इडा (मातृ भाषा) के रूप में है (विस्त्रोवाय उदिरते गावोभिमन्तिधेवनः। हरिरेति कनिक्रदत्। सामवेद-1.2.869), ऋग्वेद में उन्हें अनेक अर्थवाचक कहा गया है तथा वह सप्तसिंधुओं (सिन्धु, वितस्ता, सतद्रु, अक्षिणी, पारुश्री, विपाशा तथा सरस्वती) में से एक हैं।

ऋग्वेद के देवीसूक्त (10.125) में वह वाक् देवी रूप में वेदों की जननी है, महर्षियों के लिए दीपशिखा हैं—ज्ञान ज्योतिपुंज है। अतः वैदिक युग में सरस्वती ने दैवी रूप धारण कर लिया तथा सांस्कृतिक उत्कर्ष के साथ उनके कार्यक्षेत्र एवं स्वरूप में परिवर्तन होने लगा था; उनकी उपासना 'अम्बतामि नन्दतामि देवतामि सरस्वती' मंत्र से होने लगी। वाङमयों में उनके तीन रूपों की उपासना के प्रमाण है-प्राकृतिक शक्ति, मानसिक शक्ति, ऐतिहासिक या मातृ शक्ति-इनके मानसिक तथा प्राकृतिक शक्ति स्वरूप वाले वर्णन वेदों में हैं जहां उन्हें जीवनदायिनी सरिता कहा गया है। (ऋग्वेद में वह देवी शक्ति तथा प्रवाहतम नदी के रूप में विद्यमान है।)

'सरस्वती' का शाब्दिक अर्थ है जलपूर्ण, जलयुक्त तथा 'सरस' से तात्पर्य है रस युक्त; इस तरह 'सरस्+वती' निरन्तर रस युक्त गतिमान, गतिशील जल प्रवाह का द्योतक है। प्राकृतिक रूप से निराकार, मानसिक रूप से देवी, सरस्वती की उपासना में उन्हें सप्त स्वर, सर्वाधिक गरिमामयी, देवी शक्ति कहा गया है। (उतमः प्रिया प्रियासु सप्तस्वरा सुजुष्टा/सरस्वती स्तोभ्याभूत।-सामवदे 10.14.69) कालान्तर में जब उन्हें ऐहिक रूप प्राप्त हुआ तब उनका सम्बन्ध ब्रह्मा से जोड़ कर उन्हें सृष्टिकर्मी, पालक, रक्षक तथा ब्रह्माणी, ब्रह्मा की शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

पौराणिक वाङ्मयों में सरस्वती को वाग्देवी, वाक्, शारदा, ब्रह्माणी आदि अनेक संज्ञाओं से स्मरण किया गया है। कठोपनिषद में वह स्वयं ही मनुष्यों को ज्ञान ज्योति से जागृत कर के उन्हें ज्ञानी बनने का उद्बोधन करती हैं जो उनके शारदा, ज्ञानदायिनी स्वरूप का द्योतक है। ऋग्वेद के देवीसूक्त (वाक् सूक्त 10/125) में उनके वाग्देवी स्वरूप का वर्णन है। वाक् का एक अर्थ दैवीय विचारों का प्रवाह है। इस तरह वह स्वयं देवी शक्ति हैं, ज्ञान की प्रेरक, विज्ञान, साहित्य, कला, संगीत की अधिष्ठात्री है। सामवेद में उन्हें चेतना, संस्कार की अधिकाली तथा सप्त मातृका शक्तियों में से एक बताया गया है। (पावकाः नः सरस्वती वाजेभिर्वा जिनीवती। यज्ञं वष्टुधिया वसुः। महोअरण्या सरस्वती प्रशेतयतिः।।) तथा (अयं गौः पृश्निरः क्रमीदस दन्मान्तर पुरः। पितरं च प्रयंत्स्व।। सामवेद, अरण्यकाण्ड, 5.630) उनके लिए अनेक स्रोतों की रचना की गई है। याज्ञवल्क्य ने सरस्वती स्रोत में उनकी जो स्तुति की है वह आज भी उपासक करते हैं। (या कुन्देदुतुषाहार धवला...)।

अग्नि पुराण (अध्याय 319) में वह चुतुर्भुजी त्रिलोचन है तथा उनके हाथ में पुस्तक, अक्षमाला है शेष दो हाथ अभय मुद्रा में हैं। किन्तु पांचवें अध्याय में वह एक हाथ में वीणा भी धारण करती हैं। (पुस्तकाक्ष- मालिका हस्ता वीणा हस्ता सरस्वती)। कालिका पुराण (अध्याय 75) में वह वीणा, पुस्तक, अक्षमाला, कमण्डल धारण किये हुये वरदहस्ता अभयदाता हैं। वृहद् धर्म पुराण (25/39) में वह शुक्ल वर्गा त्रिनेत्र धारिणी है, मस्तक पर चन्द्रकला, हाथों में सुधा, यक्षमाला लिए है। ब्राह्मण ग्रंथों में वह विद्या बुद्धि देवी है; महाभारत (शांति पर्व 112/25-27) में श्वेत वर्णा, श्वेत पद्मासीना, अक्षमाला, वीणा, पुस्तक धारिणी है तथा देवी सूक्त (ऋग्वेद 10/125) में वही महालक्ष्मी, महाकाली तथा महासरस्वती तीनों ही है।

ऋग्वेद में वही पावन सरिता हैं जिनका निवास स्वर्ग तथा पृथ्वी पर है। स्वर्ग में वह शुभ्रा ज्योतिर्मयी हैं, दिव्य हैं, अन्याय पुराणों में स्वर्गस्थि सरस्वती सुरगंगा, आकाश गंगा, मंदाकिनी है। पृथ्वी श्री सरस्वती नदी अब लुप्त हो गयी है। महाभारत (वन पर्व 130/1-2) के अनुसार सरस्वती तट पर प्राण त्यागने वाला सीधे स्वर्ग जाता है। कहते हैं कि महर्षि उत्तथ्य के शाप से सरस्वती मरु प्रदेश में जा धरती में विलीन हो गयी (महाभारत, अनुशासन पर्व, 155/25-27)।

इस तरह स्वर्ग तथा पृथ्वी पर वास करने वाली सरस्वती ज्ञान देवी के रूप में भारतीय जीवन दर्शन की प्रतीक वन साहित्य, कला, संगीत की अधिष्ठात्री रूप से आज तक उपास्य है। माघ शुक्ला पंचमी (वसन्त पंचमी) को आज भी साधक उनकी प्रधान उपासना करते हुए कहते हैं-

नाम रूपात्मकं सर्व यस्थामोवेश्य तां पुनः।
ध्यायन्ति ब्रह्म रूपैका सा मां पातु सरस्वती॥
ऐमम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वती।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब न स्कृधिः॥

भूरेश्वर महादेव : जहां भाई-बहन के रूप में विराजमान हैं शिव

हिमाचल का प्रत्येक जनपद मण्डल व ग्राम का प्रत्येक व्यक्ति शिव महिमा के सम्मुख नतमस्तक रहता है। साथ ही इस बात को सहृदय से स्वीकार करता है और आराध्य देव शिव को शक्ति मानता है। शिव शक्ति कहीं मां और पुत्र के रूप में कहीं भाई-बहन के रूप में और कहीं पति-पत्नी के रूप में प्रकट हुए हैं। साधारणतः पारिवारिक रूप तो आम है परन्तु मां-पुत्र के रूप में रेणुका जी में एवं भाई-बहन के रूप में भूरेश्वर/भूर्शिंग महादेव पच्छाद में विराजमान होने के कारण ही सम्भवतः इस जनपद को सिरमौर कहलाने का गौरव प्राप्त है।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों व भूलिंगों के इतिहास में भूःलिंग कालान्तर में भूर्शिंग जो दूग्धाहारी भूरेश्वर महादेव के नाम से विख्यात है। सिरमौर जिले के नाहन शिमला राजमार्ग पर सराहां नैनाटिक्कर के ठीक मध्य क्वागधार की ऊँची (समुद्र तल से लगभग 6500 फुट) चोटी पर विराजमान है। किंवदन्ति है कि द्वापर में महाभारत के युद्ध को

● डॉ. मनोज

भगवान शंकर और पार्वती जी ने इस स्थान से देखा था। लोक गाथा के अनुसार बाल्यकाल में मां के वियोग और सौतेली मां के दुर्व्यवहार से प्रताड़ित भाई-बहन पशुओं को चराने के लिए जंगल में इस शिवलिंग के आसपास रहते व शाम को पशुओं को घर ले आते थे। दैवयोग से एकदिन भयंकर आंधी तूफान में गाय का एक बछड़ा कहीं जंगल में खो जाने के कारण सौतेली मां ने उसे ढूंढ लाने के लिए भाई को भेज दिया। झंझावत व हिमपात के कारण बछड़े व भाई ने जंगल में ही प्राण त्याग दिए। दूसरे दिन जब बहन व बाप उन्हें ढूंढने के लिए जंगल में आए तो देखा कि दोनों ही बर्फ व ठण्ड के कारण पत्थर के रूप में समा (लुप्त हो) गए। इधर बहन का विवाह एक काने व कोढ़ी से करने का निर्णय ले लिया गया। सौतले भाई ने सौतले होने के कारण जान बूझकर शर्त हार कर ऐसा किया, शर्त यह थी कि लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित दूसरी पहाड़ी से राणा गमोला जो काना व कोढ़ी व्यक्ति था, यदि तीर फेंककर पहाड़ी को पार कर ले तो उसे अपनी बहन का विवाह कर दिया जाएगा और यदि ऐसा न कर सके तथा उसका स्वयं का तीर पार जाए तो गमोला को अपनी बहन की शादी इससे करनी होगी। इस प्रकरणके बाद जब सौतेली बहन की डोली उस काने कोढ़ी के साथ जब विदा होने लगी तो अनिच्छापूर्वक उस शक्ति स्वरूपा ने जहां उसके भाई की मृत्यु हुई थी, पर डोली से छलांग लगाकर अपनी इहलीला समाप्त कर दी।

हिमाचल स्कूल शिक्षा बोर्ड की हिन्दी की आठवीं कक्षा की पाठ्य पुस्तक जो सातवें दशक में लागू की गई थी में डाक्टर खुशी राम गौतम द्वारा लिखित 'अमर प्रेम' शीर्षक की संकलित कहानी इसी देवता की यह अमर कहानी थी। पारम्परिक रूप से आज भी ढोल-नगाड़ों व वाद्य यन्त्रों सहित पुजारी व अन्य लोगों द्वारा पुजारली गांव से देवता की शोभा यात्रा निकाली जाती है। दुर्गम रास्ते से होते हुए यात्रा पहाड़ी के शिखर पर पहुंचती है, वहां पर उसी बछड़े पर दूध चढ़ाया जाता है, तथा ढांक के भंयकर मार्ग से देवता एक शिला विशेष जो लगभग 3 किलोमीटर खड़ी ढाक में मन्दिर के पार्श्व भाग में तिरछी व अति भयंकर रूप में स्थित है, पर आरोहण करके दूध की धार डाली जाती है।

वर्ष में दो देवशयिनी तथा देवप्रबोधिनी एकादशी को यह दृश्य देखने को मिलता है और उसी शिला विशेष जिस पर दूध व घी क्विंटलों के हिसाब से डाला जाता है, पर छलांग लगाकर अठखेलियां करते हुए अपनी अमर वाणी से बताता है। वहीं से लगभग 3 किलोमीटर ढांक की तलहटी में स्थित मन्दिर महन्दोबाग में बैठे कारदार देववाणी सुनते ही रात्रि जागरण करते हैं और देव पूजन प्रारम्भ कर देते हैं। उधर पुजारली गांव जो करीब राजमार्ग से 200 किलोमीटर की दूरी के मन्दिर के पास बैठा महिला समूह देव कीर्तन करते हुए रात्रि जागरण करता है।

शिवलिंग : यह लिंग सृष्टि के आदिकाल से ही माना जा सकता है। मात्र सृष्टि के परिवर्तन पर ही कोई परिवर्तन विशेष सम्भव हो सकता है। इस लिंग की उत्पति सृष्टि के आदिकाल से ही मानी गई है। परम्परा के अनुसार इस लिंग से जन साधारण को हाथ आदि से स्पर्श नहीं करना चाहिए।

ताण्डवशिला : सौन्दर्य की दृष्टि से यह एक ऐसी अद्भूत पाषाण शिला है जो शिवलिंग के पार्श्व भाग में स्थित है। कैलाश सदृश इस दिव्य स्थान की आलौकिकता का दृश्यांकन इस पर परम्परागत रूप से चढ़े घी और दूध जो इस शिला विशेष को इसके बहुत ज्यादा तिरछे होने से और भी फिसलनी बना देते हैं जिससे नीचे 3 किलोमीटर की खाई है। कैलाश सदृश इस दिव्य स्थान के होने से इस शिला विशेष को ताण्डव शिला की उपमा दी गई है जिस पर देवशयनी व देव प्रबोधिनी एकादशी के समय भूरेश्वर महादेव की इहलौकिक खेल देही रूप में इस पर होती देवप्रबोधिनी एकादशी के समय 22 (खेल) उपगोत्रों द्वारा परम्परागत कार्य विशेष से देवता को प्रसन्न किया जाता है। देवता के कारदार जो मन्दिर की तलहटी पूजा स्थली मेहन्दोबाग में पूरी रात देवता के गुणानुवाद में लगे रहते हैं।

'सिजी बे मेहन्दुओं मैरी जोड़ो' की देववाणी सुनकर मेहन्दोबाग में स्थित प्राचीन शिवलिंग एवं पीपल के वृक्ष में दुग्ध की धार चढ़ाते हैं, दूसरी देव वाणी में **'मन्धेणे काण्डा डल्आ परजा'** अर्थात् मन्धेणा नाम के गांव में जहां देवता के पूजारी जब देव जन यात्रा के दौरान स्थान विशेष पर ठहरे थे तो भेलनु (खेल) उपगोत्र के कुछ लोगों ने विवादित फैसले पर ईर्ष्या रखते हुए उस स्थान विशेष में आग लगा दी। (कान्डा) शब्द पहाड़ी भाषा में ताबें का बना हुआ बर्तन जिसमें देव मूर्ति लोगों में दर्शनार्थ ले जाई जाती है। वह बर्तन विशेष तांबे की धातु का होने के कारण द्रवित हो गया इसी वाणी के द्वारा प्राचीन उस उपद्रव को देवता याद करवाते हैं, दण्ड रूप में प्रतिवर्ष देवयात्रा एवं दशांश अनाज का भाग देना होता है जो आज भी देव पूजारी को दिया जाता है। तीसरी देववाणी में, **'मैरी शैली धूई री आग परजा'** इस तिरछी चट्टान विशेष पर ताण्डव खेल के सदृश पूरी शिला पर करवटें लेते हुए तीसरी देववाणी से प्रजा को अपनी शक्ति विशेष दिखाते हैं। **'मेरा बाजा सुहाणा परजा'** अपनी चौथी वाणी से यह महान सात्विक देव शक्ति इस वाणी से अपने प्राचीन वाद्य यन्त्रों को बताते हैं। ढोल, नगाड़े, अरनशींगा, करनाल और शहनाई यह पांच बाजे इस देव शक्ति के हैं। पंचम वाणी में **'ई मेरा खेल असौ परजा'** इस देव लीला द्वारा इस महान देव परम्परा को मात्र एक खेल बताया है एवं उपरोक्त भयवाहक एवं चमत्कारी खेल जो मात्र इस दिव्य स्थान में देवता के विशेष नियम एवं परम्परा पर आधारित होती है जिसके कारण इस स्थान के संरक्षण के लिए पुश्तैनी पुजारी को सरकार द्वारा पट्टे से प्राधिकृत किया जाता है।

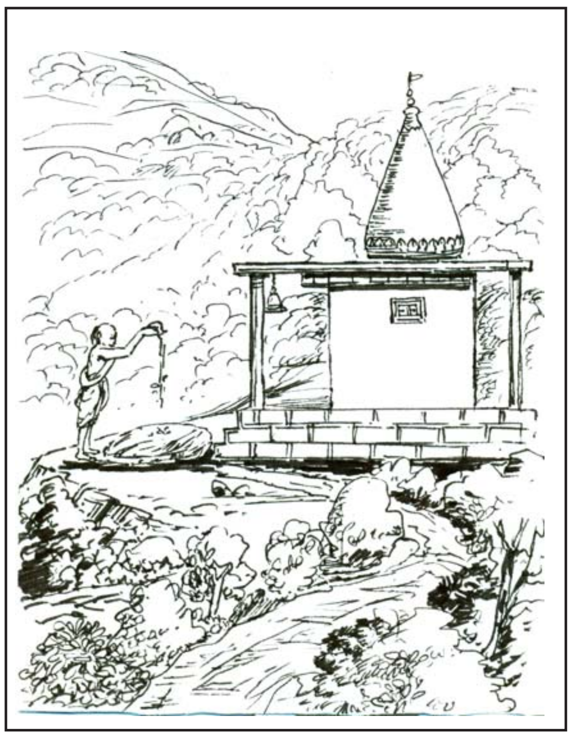

नन्दीश्वर महाराज : यह नन्दी बैल प्राचीन काल से ही पाषाण रूप से इस स्थान विशेष में स्थित है जिस पर शीला विशेष के रोहण के पूर्व में दूध की धार चढ़ाई जाती है।

पूजास्थली मेहन्दोबाग : यह स्थान मन्दिर के तलहटी में मेहन्दोबाग नाम से स्थित है। प्राचीन शिवलिंग, पीपल वृक्ष जहां पर देववाणी के होते ही अर्धरात्रि के समय दूध की धार मेहन्दु (खेल) उपगोत्र के लोगों द्वारा चढ़ाई जाती है एवं मन्दिर के विशेष स्थान से यदि सिक्कों को फेंका जाए तो बहुत समय तक उसकी आवाज इस स्थान से सुनाई देती है।

पूजास्थली पुजारली : यह पूजास्थली इस देवता के पुश्तैनी सरकार द्वारा प्राधिकृत पुजारी द्वारा मूर्तियों की सुरक्षा आदि के लिए स्व० श्री भूरीया राम जी के काल में निर्मित की गई थी। इससे पूर्व सन् 1875 में पूजनीय स्व० श्री पाधाराम जी के समय में उनके बुजुर्ग द्वारा मन्दिर से चोरी आदि के बचाव के लिए अपने निवास स्थान पुजारली में एक मकान के कोने में देवता की मूर्ति रखी थी, इस देवता के पुजारी छत्र, चंवर, त्रिशुल धारण किये नंगे पांव देव वाणे से सुसज्जित होकर डोल नगाड़ों कारसेवकों सहित देवशयनी व देव प्रबोधिनी एकादशी को मन्दिर में आते हैं। त्योहारों में शनिवार, रविवार को देव परम्परा होने के कारण शिला विशेष की पूजा के लिए पुजारी को आज भी इसी कारण मन्दिर में आना पड़ता है।

देही नदी : मन्दिर के पार्श्व भाग की समीपवर्ती खाई में यह जलधारा विशेष रूप से बहती है जिसका जल कभी नहीं सूखता है। पौराणिक मान्यता है कि बहन देही के विवाह पालकी से छलाँग लगाने पर इस नदी का प्राकट्य हुआ था जो आगे चलकर घग्घर नाम से प्रसिद्ध हुई है।

क्वाल नदी : यह नदी विशेष है जहां से पुजारी आज भी परम्परा के अनुसार अष्टमी की रात्रि को श्वेत पत्थर जो देव योगवश निकलते हैं उन्हें नवमी की रात्रि में देव जागरण के समय भूना जाता है जिसे (छू) शब्द से कहा जाता है, इसी से मन्दिर की सफेदी देव परम्परा के अनुसार आज भी की जाती है, जिससे मन्दिर की शुद्धि होना बताया जाता है। (क्रमशः)

कांगड़ा किला : इतिहास

● सीमा परिहार

कांगड़ा का पुराना नाम त्रिगर्त था कांगड़ा के प्रचलित नामों में भीम कोट, नगरकोट (नगर का किला), त्रिगर्त (तीन घाटियों का देश), जो कि सतलुज, रावी और व्यास नदियों का क्षेत्र था और ऐतिहासिक शासक और इसके संस्थापक सुशर्मा चंद्र के नाम पर कांगड़ा का एक और संबोधन सुशर्मपुर नाम से भी मिलता है। बहुत प्राचीन काल से ही यह धरा वीरों की धरती के नाम से जानी जाती है। कांगड़ा के संस्थापक और शासक सुशर्मा चंद्र द्वारा महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से भाग लिये जाने का वर्णन कई ग्रन्थों में मिलता है। उसने अर्जुन को समाप्त करने की शपथ ली थी। सुशर्मा चंद्र और उसके भाईयों सतरथ, सत्य वर्मा, सत्व्रत, सत्येशु और सत्य कर्मा कौरवों की ओर से महाभारत में लड़े थे। महाभारत के शल्य पर्व में वर्णित है कि :

सशरः प्रेषितः स्तेनः क्रोधदीप्तेन धन्विनः।
सुशर्माणः समासाध्यः विभेद ह्रदयं रणे।।

अर्थात क्रोध से तमतमाते हुये धर्नुधर अर्जुन के चलाये गये उस बाण ने सुशर्मा पर चोट कर उसकी छाती भेद डाली।यही विशेषता कांगड़ा के लोगों में आज भी विद्यमान है। पाणिनी ने अष्टाध्यायी में कांगड़ा के लोगों को युद्धप्रिय जाति का संबोधन दिया है जो विशेषता आज भी कांगड़ा घाटी के लोगों के रक्त में विद्यमान है।

भारत के मध्यकालीन इतिहास में सामरिक दृष्टि से किले के निर्माण का वर्णन मिलता है। शत्रुओं को भ्रमित करने, राज्य की गोपनीयता और सशक्तिकरण के लिये दुर्गो का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सशक्त दुर्ग उसके स्वामी की शक्ति का प्रतीक होते थे और वहीं पर राजा का धनबल और सैन्यबल भी एकत्रित होता था। इसके अलावा राज्य के लिये सभी आवश्यक वस्तुओं का भी दुर्ग भंडार होता था।

कांगड़ा के प्रसिद्व किले का निर्माण महाभारत युद्व के बाद आनन–फानन में सुशर्मा चन्द्र द्वारा किया गया था। किले की प्राचीनता को निश्चित करना कठिन कार्य है परन्तु इस किले की संरचना व दर्शनी दरवाजे के टूटे हुए भाग के आधार पर किले के भीतर बने मन्दिरों को 9वीं–10वींशताब्दी के जैन और ब्राह्माण सम्प्रदाय के मन्दिरों से सम्बन्धित माना जा सकता है।

कांगड़ा किले का प्राचीनतम् प्रमाण 1009 ई0 में महमूद गजनवी के आक्रमण के समय का मिलता है जब उत्तर भारत पर अपने आक्रमण के दौरान उसने कांगड़ा, कांगड़ा के मन्दिरों पर आक्रमण किया और खूब लूट मचाई। महमूद गजनवी के समकालीन इतिहासकार अल–उतवी के विवरणों को देखें तो महमूद गजनवी ने कांगड़ा के मन्दिरों और किले की दीवारों में खजाना छिपे होने की जानकारी मिलने पर ही कांगड़ा दुर्ग पर आक्रमण किया था। मात्र तीन दिन के संघर्ष के पश्चात ही किले की सेनाओं ने आत्म समर्पण कर दिया था। महमूद गजनवी को कांगड़ा दुर्ग की लूट में चांदी के बने एक मकान मिलने के भी विवरण मिलते हैं। इसके अलावा सात लाख सोने की दीनारें, सात हजार मन चांदी और तीस मन के लगभग रत्न प्राप्त हुये थे।

1043 ई0 में दिल्ली के हिन्दू राजाओं ने इस किले पर अधिकार कर लिया और तीन शताब्दियों तक इसे अपने अधिकार में रखा। 1337 ई0 में मुहम्मद तुगलक ने व 1365 ई0 में उनके उत्तराधिकारी फिरोज तुगलक ने किले पर अपना आधिपत्य जमाया।

1556 ई0 में अकबर ने नगरकोट को जीता एवं भारतीय राजकुमार धर्मचन्द्र को वहाँ का शासक नियुक्त किया तत्पश्चात् 1563 ई0 में धर्मचन्द्र ने अपने पुत्र माणिक्य चन्द्र को नगरकोट का उत्तराधिकारी नियुक्त किया। दस वर्ष पश्चात् जयचन्द्र ने वहाँ की गद्दी संभाली। 1571 ईस्वी में पुनः अकबर के आदेश से किले पर खानजहाँ द्वारा आक्रमण किया गया परन्तु मुसलमान शासक किले पर कब्जा करने में असफल रहे। 1621 ई0 में जहाँगीर ने इस पर अपना कब्जा जमाया। यह किला पहाड़ी क्षेत्रों का अत्यंत शक्तिशाली किला था। इसकी शक्ति के बारे में जहांगीर ने विवरण दिया है कि यह दुर्ग इतना शक्तिशाली है कि यदि इसमें आवश्यकतानुसार और सामान रहे तो शत्रु इसके आंचल तक नहीं पहुॅच सकते। 16वीं 17वीं शताब्दि में भारत की यात्रा करने आये युरोपीयन यात्री विलियम फिंच ने हिन्दूधर्म में प्रचलित मूर्ति पूजा और अन्य परम्पराओं का उल्लेख करते हुये नगरकोट नाम का भी उल्लेख किया है।

औरंगज़ेब के शासन काल में कांगड़ा सैयद हुसैन खान, हसन अब्दुल्ला खान, पठान एवं नवाब सैयद खलिलुल्लाह खान के कब्जे में रहा। औरंगजेब की मृत्यु के बाद कांगड़ा किला अनेक शासकों के अधीन रहा। 1743 ई0 में नवाब सैफ उल्ला ने इस किले पर अपना अधिकार स्थापित किया एवं 1783 ई0 तक उनके अधीन रहा। 1783 ई0 में जयसिंह घानी नामक एक सिक्ख नेता ने कांगड़ा किले को अपने अधीन किया। इसके बाद चार वर्ष तक अमरसिंह थापा ने इस किले पर शासन किया। अन्त में, 1809 ई0 में उसने रणजीत सिंह को किले का उत्तराधिकारी नियुक्त किया बशर्ते कि वह कोट काँगड़ा अमर सिंह को सुपुर्द करें। गोरखो की पराजय के बाद कांगड़ा किले पर सिक्खों का अधिकार स्थापित हुआ और वे 37 वर्षो तक यहां शासन करते रहे। 1846 ई. में अंग्रेज़ी हुकूमत ने इस किले को अपने अधीन किया। 1905 ई. में विनाशकारी भूकम्प के कुछ वर्ष पूर्व अंग्रेज़ों ने इस किले को खाली कर दिया। 1909 ई0 में इसे राष्ट्रीय महत्त्व का स्मारक घोषित किया गया।

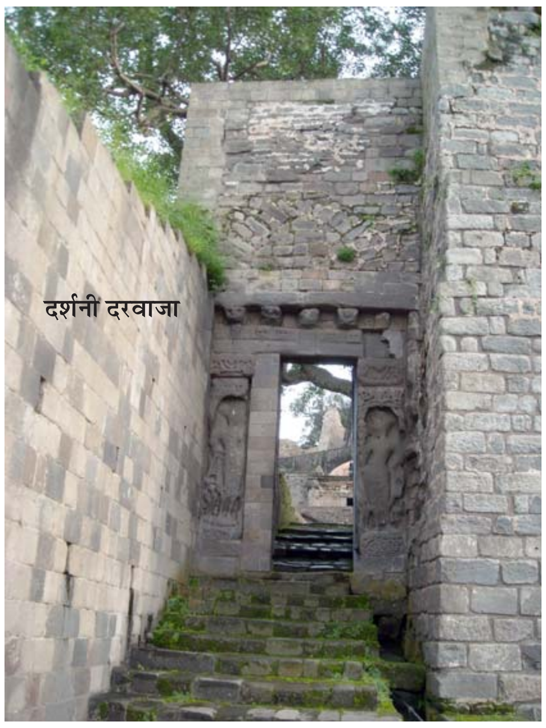
दर्शनी दरवाजा

भौगोलिक स्थितिः

काँगड़ा जिला मुख्यालय चण्डीगढ़ से 225 कि0मी0 की दूरी पर चण्डीगढ़ धर्मशाला राष्ट्रीय राजमार्ग न. 88 पर स्थित है। काँगड़ा का किला मांझी और बाणगंगा नदियों के किनारों पर स्थित है जहाँ एक लम्बे तंग रास्ते से पहुँचा जा सकता है। केवल नगर की तरफ ही एक सुगम (सुबोध्य) स्थान है। वर्तमान में यह स्थान पुराना कांगड़ा के नाम से विख्यात है। यह किला लगभग तीन कि0मी0 के क्षेत्र में फैला हुआ है, जहां से धर्मशाला और धौलाधार की बर्फ से ढकी चोटियों का विहंगम दृश्य देखने को मिलता है।

वास्तुः

किले के अन्दर प्रवेश एक छोटे आंगन से किया जाता है जो दो दरवाजों के मध्य स्थित है जिसे फाटक कहा जाता है। इसका निर्माण महाराजा रणजीत ने करवाया था। यहाँ से एक लम्बी संकरी गली लौह दरवाजे एवं अमीरी दरवाजा अथवा शायक दरवाजे तक जाती है।

यह दोनों दरवाजे नवाब अलीफ खान जो कि प्रथम मुगल गवर्नर थे, को समर्पित है। इसके बाद यह गली एक तीव्र मोड़ लेती है एवं जहाँगीर दरवाजे तक जाती है जिसका निर्माण जहाँगीर ने इस किले को जीतने के बाद करवाया था। चढ़ाई के अन्त में किले का ऊपरी दरवाजा है जिसे अंधेरी अथवा हंदेली दरवाजा कहा जाता है इस द्वार के ऊपर मन्दिर द्वार है जिसे दर्शनी दरवाजा भी कहा जाता है। इस दरवाजे के दोनों तरफ नदी देवी गंगा एवं यमुना अवस्थित है। इस दरवाजे से एक आंगन में निकला जाता है, जिसके दाहिनी ओर कुछ कक्ष बने है एवं इसके बाँई तरफ एक जैन मठ परिसर अवस्थित है। इसके दक्षिणी तरफ लक्ष्मीनारायण, शीतला एवं अम्बिका देवी का पूजा स्थल है।

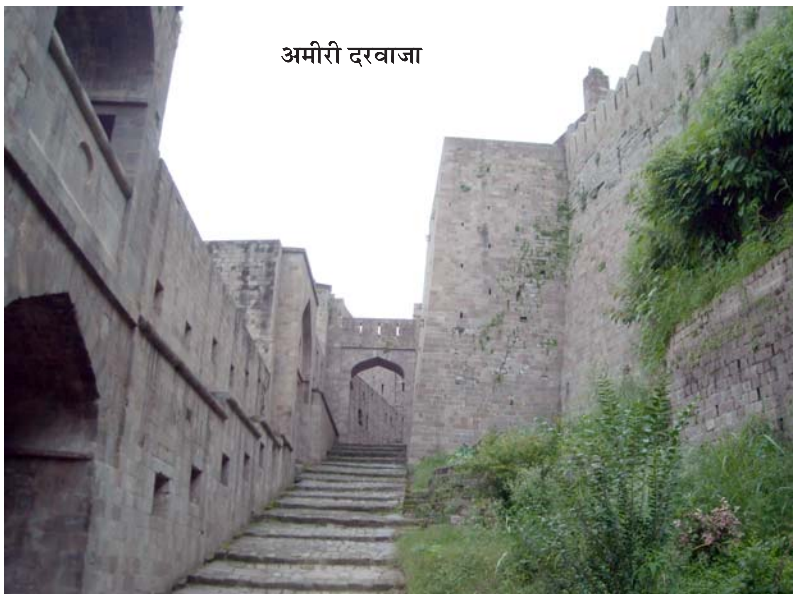
अमीरी दरवाजा

अन्त की दो संरचनाओं के मध्य एक सीढ़ी एवं एक गेट से महल एवं निगरानी बुर्ज को जाया जा सकता है। इस गेट का नाम 'महलों का दरवाजा' अथवा 'महल दरवाजा' है। अन्धेरी एवं दर्शनीय दरवाजे के बीच एक संकरी गली है जो किले के पीछे की ओर जाती है जहाँ विभिन्न अन्तरालों पर बारूद खाना, सूखा तालाब, बारादरी, शिव मन्दिर, नवगाजापीर, कपूर सागर एवं अनेक कुएं मौजूद है। खुले आंगन के दक्षिणी तरफ दो मन्दिर स्थित है, जिनका नाम लक्ष्मीनारायण मन्दिर एवं शीतला मन्दिर है। लक्ष्मीनारायण मन्दिर पूर्वी तरफ एवं शीतला माता मन्दिर पश्चिमी तरफ है। ये दोनों मन्दिर नागर शैली में बने हैं एवं 9वीं–10वीं शताब्दी के हैं।

अन्य मन्दिर जिसका नाम अम्बिका देवी मन्दिर है, जैन विहार परिसर से दक्षिणी पश्चिमी दिशा में अवस्थित है। पश्चिमी दिशा की ओर आरूख इस मन्दिर में एक मण्डप है। गर्भ गृह आयताकार है एवं पश्चिमी गर्भ गृह दिशा की ओर आरूख है एवं इसके अन्दर अम्बिका देवी की मूर्ति है। मण्डप वर्गाकार है जहाँ वर्तमान में एक आदिनाथ की मूर्ति एवं एक अभिलेख है जिसकी तिथि 1446 ई0 है। ये सभी संरचनाएं एक मैदानी भाग में बिखरी हुई हैं जहाँ पहले कभी राजमहल हुआ करता था। वर्तमान में यहाँ कुछ कुएं व नालियों के अवशेष देखें जा सकते हैं। दक्षिणी शीर्ष पर अवस्थित संरचना एक रसोई गृह रही होगी। यहां से एक रास्ता निगरानी बुर्ज की तरफ जाता है।

अन्धेरी दरवाजे के ठीक नज़दीक एक संकरा रास्ता छोटी पहाड़ी की ओर जाता है जो मस्जिद के अवशेष को दर्शाता है। इसका निर्माण अकबर के गवर्नर खानजहाँ ने 1573 ई0 में करवाया था। सूखा तालाब एक आयताकार संरचना है। ऐसा कहा जाता है कि महमूद गजनवी ने एक सुरंग के जरिए राजप्रसाद को लूटा था। यह सुंरग पहाड़ी के तरफ मांझी नदी की ओर खत्म होती थी। इस रास्ते से कुछ दूरी पर एक वर्गाकार एवं हवादार संरचना थी जिसमें नौ कक्ष एवं बारह निकास थे जो कि सम्भवतः बारादरी था। सुरक्षा दीवार के ऊपरी हिस्से में स्थित पिछला द्वार दो हिस्सों में बंटा हुआ है। पहला भाग जो कि नदी की तरफ से आता था उसका द्वार आयताकार था और पश्चिम दिशा की तरफ आरूख था जिसकी अवस्थिति उत्तर–दक्षिण की ओर है यहाँ एक तीव्र मोड़ लेकर ऊंची सीढ़ियों से घूंघट दीवार के सहारे पहुँचा जा सकता है।

पिछले दरवाजे को पार करने के बाद शिव मन्दिर के पास पहुंचा जा सकता है जो रास्ते के बाँई तरफ स्थित है। शिव मन्दिर के अन्दर मध्य में एक शिवलिंग है। जबकि दक्षिण तरफ गौरीशंकर नन्दी के ऊपर बैठी हुई स्थिति में है। ये दोनों मूर्तियां 19वीं शताब्दी की हैं। शिव मन्दिर से लगभग 500 मी0 की दूरी पर नवगाजा पीर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि यह एक नौ फुट लम्बे फकीर की समाधि है।

वापसी दीवार के ठीक पहले एक रास्ता नीचे की तरफ दक्षिणी दिशा की ओर जाता है जो कपूर तालाब के पास समाप्त होता है। कपूर तालाब एक वर्गाकार टैंक (40 x 40 x 6 मीटर) है। इस तालाब के अन्दर दो स्तम्भयुक्त दरवाजे व सीढ़ियां है जो नीचे की तरफ जाती है जहाँ एक विशाल चबूतरे पर बैठे हुए विष्णु एवं चंवर लिये हुए द्वारपाल उत्कीर्ण हैं। सभी दिशाओं से नालियां आकर एक जलनिकास में मिलती है जो कि पूर्वी दीवार के मध्य में स्थित है। एक तंग कुआं दक्षिणी पूर्वी किनारे पर स्थित है।

किले के प्रारम्भिक भाग में रानी तालाब है जिसे राजघराने की महिलाएं नहाने के लिये प्रयोग करती थीं। ये इस प्रकार से निर्मित है जिसके साथ प्रयोग के लिये कमरे निर्मित है जिनका प्रयोग नहाने के बाद राजघराने की स्त्रियां साज–सज्जा आदि के लिये किया करती थे।

इसके अलावा इस किला परिसर में एक दर्शनीय पुरातत्वविक् संग्रहालय भी स्थित है इस संग्रहालय में पाषाण काल के उपकरण, मूर्तियां, सिक्के इत्यादि संग्रहित हैं जो काँगड़ा किला एवं इसके आसपास के क्षेत्रों से इक्ट्ठे किए गए हैं। किले से प्राप्त कुछ प्राचीन मूर्तियों और दीवारों के अवशेषों को भी संग्रहालय में देखा जा सकता है। 1905 में आये भीषण भूकम्प से किले की प्राचीरों को बहुत क्षति पहॅुची थी लेकिन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण शिमला मंडल शिमला द्वारा इसका जीर्णोद्वार कर किले को प्राचीनतम रूप दिया गया।

सिरमौर का महाकुंभ मारकण्डेश्वर धाम बोहलियों

✍ सुभाष चन्द्र शर्मा

नाहन–पांवटा साहिब, देहरादून राष्ट्रीय राजमार्ग पर नाहन से लगभग 17 किलोमीटर दूर बोहलियों नामक स्थान है। इस पवित्र स्नान को यदि सिरमौर का महाकुंभ कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। यहां महर्षि मार्कण्डेय ने भगवान शिवशंकर की घोर तपस्या करके अमरता पाई थी तथा नदी के रूप में स्थित होकर जन मानस का कल्याण किया।

पुराणों में महर्षि मार्कण्डेय की जन्म स्थली हरियाणा में कैथल के समीप मटौर नामक स्थान मानी गई है। इनके पिता का नाम मृकण्डु ऋषि तथा माता का नाम मनसीवनी देवी बताया गया है। कहते हैं कि इनके कोई सन्तान नहीं थी तथा सन्तान प्राप्ति के लिए इन्होंने विष्णु भगवान की तपस्या की। इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने इनको एक पुत्र का वरदान दिया। वरदान में बालक की आयु 12 वर्ष बताई गई तथा जिसको सभी वेदों और शास्त्रों का ज्ञाता होना बताया गया।

समय पूरा होने पर ऋषि दम्पति के महर्षि मार्कण्डेय का जन्म हुआ। यह बालक जन्म से ही आलौकिक तथा दिव्य था। बाद में 12 वर्षों में अमरता प्राप्त करने के लिए भगवान शिवशंकर की जगह–जगह पर घोर आराधना की। हरियाणा सीमा पर एशिया के प्रसिद्ध फोसिल पार्क सुकेती के पास घने जंगलों में शतकुम्भा नामक स्थान पर भी इन्होंने शिवशंकर भगवान की घोर तपस्या की। उस स्थान पर पानी की सात धाराएं आज भी देखी जा सकती है। वहां से शिवमंदिर पौड़ीवाला को होते हुए अपनी तपस्या का अन्तिम पड़ाव इन्होंने बोहलियों नामक इस स्थान को बनाया। इस स्थान विशेष को जोगीबन के नाम से जाना जाता है।

महर्षि मार्कण्डेय ने तपस्वी होने के साथ–साथ पुराणों की रचना भी की। मार्कण्डेय पुराण 18 पुराणों में से एक है तथा इसके रचनाकार महर्षि मार्कण्डेय ही है। श्री दुर्गा सप्तशती मार्कण्डेय पुराण का ही एक अंश है।

मार्कण्डेश्वर धाम बोहलियों में महर्षि मार्कण्डेय ने शिव की घोर तपस्या की। यहां की मिट्टी में आज भी धूने की राख तथा कोयले के अंश मिलते हैं। पुराणों में बताया गया है कि जब इनकी आयु के 12 वर्ष पूरे हुए तो यह महामृत्युंजय मंत्र का जाप कर रहे थे। धर्मराज को देखकर इन्होंने अपने सामने स्थित शिवलिंग को बाहों में भर लिया जिससे शिवशंकर भगवान एकदम से वहां पर प्रकट हुए तथा इन्हें नदी के रूप में अमर कर दिया तथा उस स्थान से मार्कण्डा नदी का उद्गम हुआ। इस तीर्थ पर पिछले दस सालों से प्रतिवर्ष पांच दिवसीय पांच कुण्डीय महामृत्युंजय यज्ञ का आयोजन किया जाता है जिसमें दूर–दूर से श्रद्धालु शामिल होते हैं।

महर्षि मार्कण्डेय का स्थान हिन्दू धर्म के अष्ठ चिरंजीवियों में है। अश्वथामा, बलि, ब्यास, परशुराम, हनुमान जैसी अमर शक्तियों के समान ही इनकी पूजा होती है।

कहानी

और सड़क खुल गई

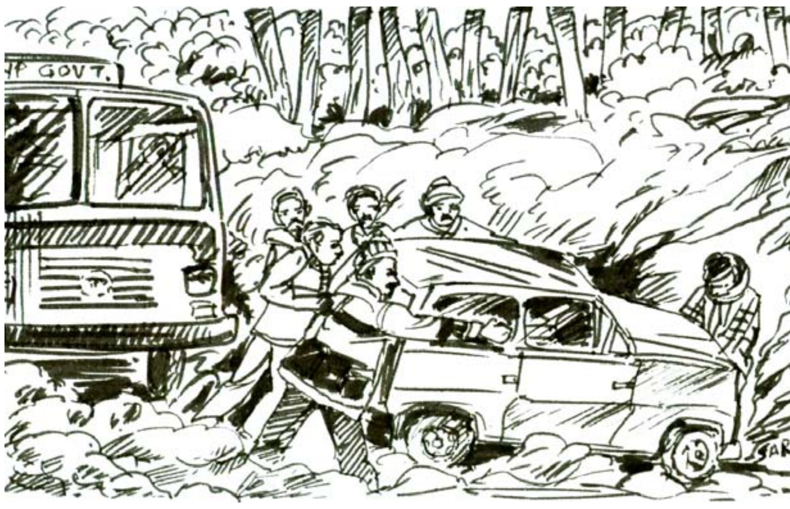

● हरीश शर्मा

नौ जनवरी की सुबह। दरवाज़ा खोला तो देखा, धरती ने बर्फ की सफेद चादर ओढ़ ली थी। मकानों की छतें हों या पेड़-पौधे सभी पूरी तरह बर्फ से ढके हुए थे। दरवाज़े के बाहर बालकनी में, रेलिंग पर, हर जगह बर्फ ही बर्फ थी। मैंने बच्चों को आवाज़ लगाई जो अभी बिस्तर में ही थे, 'बच्चों! देखो, बर्फ पड़ी है।' आवाज़ सुनते ही बच्चे, जो चार बार आवाज़ लगाने पर भी नहीं उठते थे, तुरन्त बिस्तर छोड़ कर दौड़े-दौड़े दरवाज़े पर पहुँचे। बर्फ देखकर बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। तुरन्त बाहर भागे और बर्फ के गोले बनाकर उससे खेलने लगे। 6 से 8 इंच तक बर्फ पडी थी। सड़कें बंद पड़ी थीं। गाड़ियों की आवाजाही पूरी तरह बंद हो चुकी थी। दूर-दूर तक बर्फ और केवल बर्फ ही दिखाई दे रही थी। आसमान पूरी तरह साफ हो चुका था। धूप खिली थी, जिसकी रौशनी बर्फ से टकराकर आँखों को चुंधिया रही थी।

सारे शहर की बिजली गुल थी। हीटर नहीं लग सकता था। सोमवार का दिन था, आफिस जाना था, सो मोमबत्ती जलाई और तैयारियाँ शुरु कर दीं। नहाने से नाशते तक ऑफिस निकलते- निकलते दस बजने को थे। बर्फ से सनी सीढ़ियाँ डरते-डरते चढ़ रहा था कि अचानक गर्दन पर ठण्डक का अहसास हुआ। पूरी गर्दन बर्फ से भर गई। कुछ बर्फ पीठ में भी घुस गई थी। बहुत गुस्सा आया मगर क्या करता बर्फ खेलने वालों को तो बस मस्ती करनी थी।

आज बस चौक से लेने के बजाय मैंने मुख्य सड़क के लिए शॉर्टकट लिया। पूरा रास्ता राहगीरों से भरा पड़ा था। बसें 10 किलोमीटर पीछे रुक गई थीं और लोग वहाँ से पैदल चल कर आ रहे थे। न कहीं कोई गाड़ी चल रही थी और न ही चलने की कोई उम्मीद थी। औरते-बच्चे सभी ठण्ड से ठिठुरते हुए अपनी लाल-लाल गाल व नाक को चमाकाए हुए चुपचाप बर्फ पर सम्भल-सम्भल कर आगे बढ़ रहे थे। मन को मोह लेने वाले बच्चों के भड़कीले मोटे-मोटे कपडे मानों बर्फ पर रंग-बिरंगे फूल चल रहे हों। मेन-रोड़ पर पहुंचा तो देखा, सड़क के दोनों ओर गाड़ियाँ आड़ी-तिरछी लगी हुई थीं। ट्रांसपोर्ट की दो बसें भी एक किनारे खड़ी थीं। दरअसल कुछ चालक अपने वाहन यहाँ तक ले आए थे लेकिन आगे बर्फ काफी ज़्यादा होने की वजह से वहीं रुक गए थे। हम बस के पास से गुजर ही रहे थे कि अचानक अवाज़ आई, 'शिमला-शिमला।' मुड़ कर देखा तो पाया उन दो बसों में से एक का ड्राइवर बस की ओर इशारा कर हमें शिमला जाने के लिए बस में बैठने का इशारा कर रहा था। राहगीर रुके और बड़ी हैरानी से उसे देखने लगे। एक-दूसरे से पूछने लगे, क्या इतनी बर्फ में बस जा पाएगी। कुछ लोग बर्फ पर बस के फिसलने के डर से उसे अनसुनाकर आगे बढ़ गए जबकि कुछ हिम्मत जुटाकर मेरे पीछे-पीछे बस में दाखिल हुए। थोड़ी देर तक मुसाफिर आते रहे और बस में बैठते रहे। देखते ही देखते बस भर गई। थोड़ी देर में ड्राइवर भी अपनी सीट पर आ बैठा। बस स्टार्ट की। थोड़ी देर इंजन गर्म होने दिया और फिर धीरे-धीरे अपने मंजिल की ओर चल दिया। इसी दौरान उसकी देखादेख दूसरी बस का ड्राइवर भी अपनी बस में बैठा और उसने भी बस स्टार्ट कर ली।

मुश्किल से 100 मीटर चलने के बाद ही बस एक तीखे मोड़ पर चढ़ाई में फिसलने लगी और रुक गई। ड्राइवर ने खिड़की खोल कर देखा, पिछले टायर बर्फ पर घूम रहे थे और बस अपनी जगह से आगे सरकने की बजाए दाएं-बाएं नाच रही थी। बड़ी ही होशियारी से ड्राइवर ने बस रोकी, बैक गियर लगाया और बस को करीब 200 मीटर पीछे एक पुल पर ले गया। पुल पर सड़क सीधी थी। यहाँ से रेस बनाकर ड्राइवर ने गाड़ी निकाली और उसी गति से पूरी चढ़ाई पार कर ली। चढ़ाई पार करते ही उसकी हिम्मत दोगुनी हो गई। उसने कंडक्टर से कहा 'टिकट बनाओ, समझो बस अब शिमला पहुँच गई।'

कड़कड़ाती ठण्ड में किसी को अस्पताल या कारोबार करने जाना था तो किसी को दफ्तर। एक जगह तो कुछ लोग एक बीमार को लेकर पैदल चल रहे थे। ड्राइवर ने रास्ते में मिलने वाली हर सवारी को बस में बिठाया। इससे बस में अच्छा-खासा वज़न भी हो गया जिससे बस को सड़क पर अच्छी पकड़ मिल रही थी। थोड़ी दूर जाने के बाद उतराई शुरु होती थी। बर्फ भरी सड़क पर गाड़ी उतारना काफी जोखिम भरा हो सकता था, खास तौर पर तब, जब सामने से कोई गाड़ी आ रही हो और गाड़ी को सड़क के ठीक किनारे पर ले जाना पडे। पूरे रास्ते में एक-दो बार ही ऐसा हुआ जब सामने से कोई गाड़ी आई हो। ड्राइवर ने बड़ी चतुराई और धैर्य से फिसलन भरी सड़क के किनारे गाड़ी लाकर उन्हें निकलने का रास्ता दिया। एक जगह एक छोटी गाड़ी बर्फ में घूम कर बीच सड़क में फंसी पड़ी थी। निकलने की कोशिश में वह बर्फ में और भी धंस गई थी। उसे देखते ही ड्राइवर नीचे उतरा और सवारियों से उसे धक्का लगाने को कहा। 8-10 सवारियों ने धक्का लगाया तो गाड़ी बर्फ से निकल गई।

अब तक दूसरी बस भी वहाँ पहुँच चुकी थी। हम लोग अपनी बस में बैठे तो देखा पीछे गाड़ियों की कतार हमारी ओर बढ़ रही थी। सड़क खुल चुकी थी। सभी छोटी-बड़ी गाड़ियाँ बर्फ में हमारी बस द्वारा बनाए रास्ते पर आसानी से चल रही थीं। देखते ही देखते बिलासपुर- शिमला राजमार्ग यातायात के लिए खुल गया था। मैं मन ही मन उस गुमनाम 'हीरो' की तारीफ कर रहा था जिसके विश्वास व हिम्मत की वजह से राहगीरों का सफर आसान हो गया था। शायद आम बोलचाल में इन्हें ड्राइवर कह कर बुलाया जाता है।

कविता

तुम्हारा गांव

जब मैं पहली बार तुम्हारे गांव आई थी
तुम खेल रहे थे, अपने नन्हें हाथों से खेत की मिट्टी में,
दोस्तों के संग
दौड़ रहे थे उन बैलों के पीछे, जो जोते जा रहे थे
पानी से भरे खेत में, धान की रोपाई के लिये
महसूस की थी मैंने भी, तुम्हारे गांव की मिट्टी की सौंधी खुश्बू

नदी की धारा से लड़ते हुए, देखा था मैंने तुम्हें
खेतों की पगडंडियों से, तितलियों के पीछे भागते हुए
हाथ फैलाकर, पंछी बन, उड़ने की चाहत लिये,
दौड़ते हुए सरसों के खेत में,
गांव के पीछे की पहाड़ी के जंगल में
गाय चराते, दौड़ते, गिरते, पहाड़ी पर फिसलते,
देखा था मैंने तुम्हें
घर का चूल्हा जलाने को, मां सग लकड़ियां ढोते हुए
चखी थी वो मेहनत भी मैंने,
तुम्हारी मां की पकाई हुई रोगी के स्वाद में।

सालों बाद फिर आना हुआ तुम्हारे गांव,
तुम्हारा गांव तो है बिल्कुल बदला हुआ
कहां गये वो खेत जहां जोतते थे बैलों के साथ,
तुम्हारे बाबा वो बड़े-बड़े खेत
यहां तो खड़ी है आसमां छूती इमारत,
जिसकी छत से दूर-दूर तक नजर नहीं आती है कोई भी फसल।

खेत की वो पगडण्डी बन गई है पक्की सड़क
न जाने वो तितलियां भटक गई है कहां
धू-धू करता वो पहाड़ी पर जंगल, बन गया है काला बादल
बारिश की तेज आवाज से कांपती है रूह भी
गांव की झील भी बन गई है प्रवासी परिन्दों की मृत्यु शय्या

और तुम, तुम भी बन गये हो मासूम बच्चे से एक बहुत बड़े दलाल
जिसने सौंप दिये जंगल, बेच डाले बाबा के खेत,
चन्द स्वार्थी लोगों के हाथ
और खो गये उम्र दराज राहों पर, खामोश जख्मों को सदा लिये हुये।

-डॉ. देव कन्या ठाकुर लोथेटा

क्या आप जानते हैं?

सीएनजी क्या है?

प्राकृतिक गैस, ईंधन का सबसे अच्छा स्रोत मानी जाती है, गैसीय ईंधनों में प्राकृतिक गैस का ऊर्जामान अधिकतम होता है। सामान्यत: यह गैस पैट्रोलियम के खनन के दौरान भूमि के अंदर से प्राप्त होती है। यह तेल कुओं के उत्खनन से अकेले या खनिज तेल के साथ प्राप्त होती है। यह गैस रंगहीन और विषहीन है। पर्यावरण की दृष्टि से इस गैस को श्रेष्ठ माना जाता है। पैट्रोल और डीजल की तुलना में सीएनजी कार्बन डॉईऑक्साइड नाइट्रोजन के ऑक्साइड तथा अन्य जैविक गैसें कम उत्सर्जित करती है। पैट्रोल की तुलना में सीएनजी पर खर्च कम आता है।

1. कौन सा जलडमरूमध्य अफ्रीका से यूरोप को अलग करता है?
2. अंटार्कटिका पर पहुंचने वाला सबसे पहला भारतीय कौन था?
3. भारत के प्रथम ब्रिटिश गवर्नर जनरल ऑफ बंगाल कौन थे?
4. विश्व में चीन पहुंचने वाला पहला यूरोपियन कौन था?
5. संसार का सबसे छोटा पक्षी कौन सा है?
6. राष्ट्रीय चीनी संस्थान किस शहर में स्थित है?
7. राष्ट्रीय युवा दिवस कब और किसकी स्मृति में मनाया जाता है?
8. विश्व मौसम विज्ञान संगठन का मुख्यालय कहां अवस्थित है?
9. भारत के निर्यात का सबसे बड़ा भाग कहां भेजा जाता है?
10. गंगा नदी के किस भाग को राष्ट्रीय जल मार्ग घोषित किया गया है?
11. किसे एशिया के ज्योति पुंज के तौर पर जाना जाता है?
12. हिमाचल प्रदेश में किस जगह पर जैव प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित किया जाना प्रस्तावित है?
13. हिमाचल सरकार द्वारा हाल ही में स्कूली बच्चों के लिए कौन सी योजना प्रारम्भ की गई है?
14. अभी हाल ही में प्रदेश के निजी क्षेत्र में कार्यरत किस चिकित्सा संस्थान में अत्याधुनिक एमआरआई यूनिट स्थापित की गई है?
15. हिमाचल को पर्यटन के क्षेत्र में कितने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं?
16. शिमला जिले के किस स्थान पर अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान आरम्भ हुआ है?

प्रस्तुति-जया चौहान

उत्तर-1. जिब्रालटर, 2. जी.एस. सिरोही, 3. वारेन हेस्टिंग्स, 4. मार्कोपोलो, 5. हमिंग बर्ड, 6. कानपुर में, 7. 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की स्मृति में, 8. जेनेवा में, 9. संयुक्त अरब अमीरात को, 10. इलाहाबाद से हल्दिया तक, 11. गौतम बुद्ध को, 12. नालागढ़ के अदूवाल में, 13. आदर्श अटल स्कूल यूनिफार्म योजना, 14. इंडस में, 15. तीन, 16. प्रगतिनगर, तहसील कोटखाई।

बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे डॉ. प्रेम भारद्वाज

रपट
कृष्ण चन्द्र महादेविया

हिमाचल प्रदेश के लोकप्रिय शायर और बेहतरीन इंसान डॉ. प्रेम भारद्वाज की स्मृति में उनकी 64वीं जयंती के उपलक्ष्य में कांगड़ा जिला के नगरोटा बगवां में गत दिनों प्रदेश भर से कवि शायर, रंगकर्मी, समाज सेवी और नगरवासियों के जमावड़े ने स्पष्ट कर दिया कि अच्छे साहित्यकार के चाहने वाले उसे सदा याद करते हैं।

चार सत्रों में चला डॉ. भारद्वाज की स्मृति में यह कार्यक्रम प्रात: 11 बजे से सायं छ: बजे तक मनाया गया। हिमाचली पहाड़ी और हिन्दी गजल को हिमाचल ही नहीं राष्ट्रीय स्तर पर नवीन मुहाबरा और दिशा प्रदान करने वाले शायर डॉ. प्रेम स्वरूप भारद्वाज के विषय में अनेक ख्यातिलब्ध साहित्यकारों ने संस्मरण सुनाये और उनके बहुमुखी व्यक्तित्व को रेखांकित किया।

अन्य जिलों की भांति मण्डी के प्रसिद्ध रंगकर्मी लवण ठाकुर के नेतृत्व में अठारह साहित्यकारों ने भाग लिया। चम्बा, हमीरपुर, ऊना, बिलासपुर, कांगड़ा, जालन्धर आदि से आये साहित्य प्रेमियों से भर पंडाल में तालियों की गर्जना डॉ. प्रेम के बेहतर शख्सियत को दर्शाती थी। पहले सत्र की अध्यक्षता हि.प्र. स्कूल शिक्षा बोर्ड के सचिव प्रभात शर्मा ने की। उनका सहयोग दिया डॉ. वीरेन्द्र ने।

डॉ. प्रेम की ग़ज़लों की प्रखरता, संप्रेषणीयता और लोकधर्मिता से सभी परिचित थे और बरबस ही पहाड़ी और हिन्दी की ग़ज़लें गुनगुना उठते थे-

लगेया लेरा पाणा भेडू,
कुनकी खाई जाणा भेडू।
सुखणा लई चढ़ाणा भेडू,
है मुस्कल बड़ा समझाणा भेडू।
बणेया कोट जरावां पट्टू,
अप्पू था पतराणा भेडू।
उच्ची नजर कदी नी करदा,
क्या मोआ जरकाणा भेडू।

हमीरपुर से आई शैली किरण और मण्डी से मुरारी शर्मा ने डॉ. भारद्वाज पर पत्र पढ़े। इसके साथ 'आकण्ठ' पत्रिका के डॉ. जीवन सिंह सुप्रसिद्ध आलोचक राजस्थान पर केन्द्रित अंक का विमोचन इप्टा के राज्य सचिव लवण ठाकुर द्वारा किया गया।

इस मौके पर चर्चित कवि सुरेश सेन निशांत सदस्य सम्पादक मण्डी भी उपस्थित रहे। डॉ. गौतम शर्मा, डॉ. ओम अवस्थी, डॉ. प्रत्यूष गुलेरी भी उपस्थित थे। बहुभाषी कवि सम्मेलन का मंच संचालन डॉ. मस्ताना द्वारा किया गयां

विविध विषयों पर प्रस्तुत कविताओं ने खूब समां बांधा। कविता पाठ करने वाले कवियों में विनोद भावुक, सुरेश सेन निशांत, कृष्ण चन्द्र महादेविया, शैली किरण, मोनिका स्वार्थी, डॉ. कमल के. प्यासा, डॉ. कांता शर्मा, रूपेश्वरी शर्मा, चम्पा शर्मा, डॉ. धर्मपाल कपूर, के. पंछी, अशोक दर्द, सुशील पुण्डीर, प्रो. ओम अवस्थी, डॉ. व्यथित, डॉ. गुलेरी, पवनेन्द्र पवन, संजना, नवीन हलदूवणी, डॉ. विजय विशाल, हरि मुरारी, दुर्गेश नन्दन, अरुण नागपाल, सत्यपाल, शक्तिचन्द्र, प्रभात शर्मा, केवल सिंह, कुलदीप गुलेरिया, सुभाष साहिल, पूरन एहसास, रत्न चन्द निर्झर, मुनीश तन्हा, डॉ. सरिता, वेद शांडिल्य और स्थानीय कवि शामिल थे।

भाषा संस्कृति विभाग, इप्टा प्रदेश इकाई, आशा एनजीओ ने स्मृति दिवस को बेहतरीन बनाने में विशेष योगदान दिया।

तीसरे सत्र में पहली बार धुडू के शीर्षक से महाकाव्य की परम्परा पर मंथन किया गया। चतुर्थ सत्र में आशा संस्था के विस्तार, पुनगर्ठन पर विस्तृत चर्चा की गई। इस अवसर पर डॉ. प्रेम स्वरूप भारद्वाज के परिजन भी उपस्थित थे।

गोद लिया बच्चा- एक नाजुक रिश्ता

कई वर्ष पहले 'सरिता' में पढ़ी एक कहानी के उद्देश्य से इस लेख की शुरूआत करना यहां विसंगत नहीं होगा। एक संतानहीन दम्पत्ति बच्चा गोद लेते हैं और उसे बहुत प्यार से पालना शुरू करते हैं। इत्तफाक कहिए या भाग्य, उनके अपना बेटा भी हो जाता है। मां के मन में एक अजीब दुराव आने लगता है। उसे बार-बार संदेह होता है कि गोद लिया बच्चा न जाने किसी चोर-उचक्के का हो। धीरे-धीरे संदेह 'फोबिया' में बदल जाता है। ऐसे में बच्चा किस मानसिक त्रासदी से गुजरा होगा इसका अनुमान हम आसानी से लगा सकते हैं। इस सारी परिस्थिति में भला बच्चे का क्या दोष?

बच्चा गोद लेना तो सरल है परन्तु उसे संतुलन से पालना इतना सरल कदाचित् नहीं है। आम धारणा यह है कि गोद लेना एक लम्बी-चौड़ी कानूनी कार्रवाई है। वह हो जाए और बच्चा अपना बन जाए तो बस, मुश्किल खत्म और आगे तो सब कुछ अपने हाथ में है-उसे लाड़-प्यार देना, उसकी जरूरतें पूरी करना, उसे अपना नाम देना, बस! अपना बच्चा होता तो उसे भी तो हम यही सब देते। तर्क-वितर्क के लिए शायद यह धारणा युक्ति-संगत है परन्तु वास्तविकता की तुला पर यह खरी नहीं उतरेगी।

गोद लेना एक नाजुक विषय है। इसमें परिवार, नाते-रिश्तेदार, समाज, एक अहम भूमिका निभाते हैं और इसके साथ जुड़ी हैं सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक परिस्थितिजन्य कठिनाइयां। बच्चा गोद लेने के बाद पहला प्रश्न सामने आता है कि बच्चे को यथार्थ बताया जाए या नहीं और यदि बताना हो तो कब? किस आयु में? यदि बताना नहीं हो तो क्या नाते-रिश्तेदार, मित्र-दोस्त, परिचित इसे छुपाए रख सकेंगे? क्या इसे रहस्य बनाए रखना संभव है?

नहीं, यह संभव नहीं है। एक समय आता है जब बच्चा जान जाता है कि वह इन माता-पिता का बच्चा नहीं है। दूसरों से पता चली बात बहुत आघात पहुंचाती है और बच्चा अपने को अनायास ही उपेक्षित महसूस करने लगता है और धीरे-धीरे जिद्दी या इन्ट्रोवर्ट बन जाता है। अपने दत्तक माता-पिता को स्वीकार नहीं कर सकता जो दोनों ओर से दुःखदायी बात होती है।

यह समझना कि बच्चे को हम इस बात की भनक तक नहीं पड़ने देंगे कि वह दत्तक लिया बच्चा है, केवल काल्पनिक विचार है। एक वास्तविक घटना आपके समक्ष रख रही हूं। हमारे एक परिचित दम्पत्ति ने बच्चा गोद लिया और तुरन्त बाद वे न्यूजीलैण्ड चले गए। वहां कोई नहीं जान सका कि बच्चा दत्तक है। कई वर्ष बीत गए। पत्नी की एक पुरानी सहेली किसी सेमिनार के लिए न्यूजीलैण्ड जा रही थी। उसने पत्र लिखा और खुशी-खुशी में उपरोक्त पत्नी ने पत्र घर में पढ़कर सुनाया। वह भूल गई कि पत्र में सहेली ने एक पंक्ति लिखी थी, 'अब तो तुम्हारा दिविक् बड़ा हो गया होगा। कितना नन्हा-मुन्ना था जब तुमने उसे गोद लिया था।' इस एक पंक्ति ने दिविक की सारी दुनिया की झकझोड़ दी थी। वह अन्ततः संभल गया परन्तु माता-पिता से उसे हमेशा रंज रहा कि उन्होंने तथ्य उससे छुपाया।

अब प्रश्न उठता है कि बच्चे को वास्तविकता कब, किस उम्र में बताना उचित है? इसके लिए कोई एक नियम या सीमा रेखा नहीं है। घर की परिस्थिति, बच्चे का मानसिक विकास, उसका निजी स्वभाव इन बातों को ध्यान में रखकर ही कदम उठाना चाहिए। पर याद रहे कि बहुत छोटी उम्र में बताना अर्थहीन है और बड़े होकर बताना उसमें हीनभाव पैदा करने वाला होता है। बच्चा थोड़ा समझदार हो जाए तो उसे प्रेम व शांति से बताया जाए। यदि वह भावुक हो भी जाता है तो उसे संभाला जा सकता है क्योंकि अभी उसका मन-मस्तिष्क बदलाव स्वीकार करने की स्थिति में होता है।

सभी बच्चे दत्तक माता-पिता से घृणा करने लगें या दुराव रखना शुरू करें ऐसा नहीं होता। माता-पिता इसी डर से सत्य नहीं बता पाते क्योंकि वे डरते हैं बच्चे की प्रतिक्रिया से। बच्चा भी समझता है कि जो उसे जी-जान से प्यार कर रहे हैं वही उसके अपने हैं। जिन्होंने उसे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ा था, वह तो केवल जन्मदाता है। फिल्मों की तरह वास्तविक माता-पिता की खोज के लिए घर छोड़कर जाना यथार्थ में लगभग असंभव है।

राम प्रकाश सिंह तथा उनकी पत्नी को एक अजीब तनाव का सामना करना पड़ा जब उनकी दत्तक ली बेटी को उन्होंने सच बताया। वास्तव में बेटी को उन्होंने गांव की अपनी रिश्तेदारी से ही लिया था। सच सुनकर बेटी मायूस हो गई। तब पति-पत्नी ने एक रास्ता निकाला। उन्होंने उसे छूट दी कि इन छुट्टियों में उसे अपने जन्मदाता माता-पिता से तथा भाई-बहनों से मिलने ले जाएंगे और यदि बेटी अपने घर ही रहना चाहे तो रह सकती है। वापस उनके साथ जाने के लिए कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करेंगे। गांव जाने और अपने बहन-भाइयों से मिलने का आनन्द बच्ची अपने में समेट न पाई पर वहां जाकर उसने जाना कि वह तो स्वर्ग-सुख में है-बड़ा शहर, अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा, इकलौती होने के कारण माता-पिता के लाड़ का केन्द्रबिन्दु। गांव के उसके भाई-बहनों को ये सब कहां? दूसरे ही दिन अपने (दत्तक) घर में चलने के लिए माता-पिता से अनुरोध करने लगी।

जो प्यार देता है, बच्चा उसकी ओर झुकता है। कुछ वर्ष पूर्व हरियाणा में एक घटना घटी जिसमें अस्पताल में लावारिस छोड़कर गई एक लड़की को सिस्टर (नर्स) ने पाला-पोसा, बड़ा किया। बालिग होने पर बेटी ने ऐलान किया कि वही उसकी मां है जिसने पाला, उसे वह आजन्म छोड़ेगी नहीं, पर जन्मदाता माता-पिता पर उसने जायदाद के लिए दावा किया।

दत्तक लिए बच्चे के प्रति जितना माता-पिता का दायित्व है लगभग उतना ही मित्रों, रिश्तेदारों का है। बातचीत या व्यवहार से बच्चे को आहत करना, जलील करना या दुराव पैदा करना दुर्भाग्य पूर्ण ही नहीं, नीचता का द्योतक है। दत्तक लिया बच्चा देखने में माता-पिता की भांति नहीं होगा और यदि आपने उसके जन्मदाता माता-पिता नहीं देखे हों तो आप भी नहीं बता सकते कि बड़ा होकर बच्चा कैसा दिखेगा। हो सकता है अत्यंत सुन्दर निकले या बदसूरत हो सकता है मेधावी हो या औसत। इन गुणों/अवगुणों को लेकर कई रिश्तेदार या शिक्षक बच्चे का मज़ाक उड़ाने से नहीं चूकते।

इसका एक उदाहरण देखिए- अमेरिका में स्थायी रूप में रहने वाली एक भारतीय महिला ने भारत में आकर अनाथालय से एक बच्ची विधिवत गोद ली। उक्त महिला का पति अमेरिकन था तथा उनके एक बेटा था। बेटी लेने के कई उद्देश्य थे-पहला, बेटियां माता-पिता का ख्याल रखती हैं; दूसरा, उसे वह भारतीय संस्कृति सिखाकर अपनी संस्कृति जतन करेगी; तीसरा, उसके पास बहुत धन-दौलत थी जिसका एक गरीब अनाथ बेटी को पालकर वह सदुपयोग करेगी। चार वर्ष की बेटी को लेकर वह गई थी, पांच-छः वर्ष बाद महिला अपने माता-पिता से मिलने आई तो नाना-नानी से मिलने के लिए बेटी भी आई। न जाने क्यों, नानी को यह सब भया नहीं। एक दिन अपने परिचितों के समक्ष बोली, 'अरे, उस लड़की का भाग्य अच्छा है। न जाने यहीं रहती तो कहीं बर्तन-भांडे ही करती। अब विदेश की हवा खा रही है। मेरी बेटी ने तो लड़की का भाग्य बदल डाला।'

क्या आप नहीं सोचते ऐसे विचार नीच हैं? यदि उस बच्ची को कोई यह बता दे तो? किसी का भाग्य हम बदल नहीं सकते। फिर ऐसे विचार व्यक्त करके दूसरे को दुःख देना कहां की सभ्यता हुई?

गाय-द-मोपासां की फ्रेंच कहानी भी उल्लेखनीय है। फ्रांस के एक गांव में दो परिवार साथ-साथ रहते हैं। गरीब हैं। एक बार एक अमीर दम्पत्ति वहां से जा रहे होते हैं तो गांव के निकट उनकी बग्गी का पहिया निकल जाता है। जब तक चालक पहिया लगाता है, पति-पत्नी टहलते हैं और बच्चों को देखकर मोहित हो जाते हैं क्योंकि उनके अपने बच्चे नहीं हैं। आपस में मशवरा करके वे हफ्ता भर बाद आते हैं और एक परिवार के पास जाकर उनका छोटा बेटा गोद लेने की बात करते हैं। इस पर बेटे की मां बिगड़ जाती है और उन्हें घर से बाहर निकाल देती है। वह दूसरे घर में जाते हैं। उनका सामाजिक ओहदा, उनकी बच्चे के लिए उतावली देख यह परिवार राजी हो जाता है। क्योंकि उन्हें बच्चे का उज्ज्वल भविष्य नज़र आता है। बीस वर्ष बाद एक युवा-सुन्दर, सजीला, अमीर-उनसे मिलने आता है। पड़ोस का युवा किसान उसे देखता है और माता-पिता से पूछता है कि क्या उस अमीर दम्पत्ति ने मुझे पहले नहीं मांगा था? वह अपने बचपन के साथी की शान-शौकत देखकर अपनी गरीबी और माता-पिता की नासमझी पर क्रोधित होकर घर छोड़कर चला जाता है।

दत्तक लेना केवल एक कानूनी प्रक्रिया नहीं है। यह एक नाजुक रिश्ता है जिसे प्रेम से सींचना होता है और सावधानी से बढ़ाना होता है। हम कदापि यह नहीं कहते कि यह रिश्ता टिकता नहीं या इसमें दरार आ जाती है। ऐसा नहीं पर हां, इसे पनपने के लिए समय देना पड़ता है। दत्तक बच्चे और माता-पिता एक-दूसरे को खून के रिश्ते से भी अधिक निभाते हैं। बस रिश्ते में खुलापन, स्पष्ट-वादिता रखें फिर देखें किस प्रकार यह प्रेम व अपनापन बरसाता है। इस रिश्ते को कम या दूसरी कैटेगरी-(सैकण्ड कैटेगरी) का ना समझें।

प्रश्न उठता है कि बच्चे को वास्तविकता कब, किस उम्र में बताना उचित है? इसके लिए कोई एक नियम या सीमा रेखा नहीं है। घर की परिस्थिति, बच्चे का मानसिक विकास, उसका निजी स्वभाव इन बातों को ध्यान में रखकर ही कदम उठाना चाहिए। पर याद रहे कि बहुत छोटी उम्र में बताना अर्थहीन है और बड़े होकर बताना उसमें हीनभाव पैदा करने वाला होता है। बच्चा थोड़ा समझदार हो जाए तो उसे प्रेम व शांति से बताया जाए। यदि वह भावुक हो भी जाता है तो उसे संभाला जा सकता है क्योंकि अभी उसका मन-मस्तिष्क बदलाव स्वीकार करने की स्थिति में होता है।

● डॉ. उषा बन्दे

कविता

मेरा हिमाचल

पहाड़ी है प्रदेश मेरा,
कहीं समतल कहीं ढलानदार
पैदल चलने की अपनी शान,
बस में घूमों तो अलग मान।
तरक्की की राह पर बढ़ता आगे
घर-घर पहुंचे बिजली-पानी
हम सबको है प्रदेश पर नाज,
किसान मेहनत कर उगाता सोना
घर-घर में समृद्धि लाता।
मेल हो चाहे हो फ्री-मेल,
आज सबको भाया है ई-मेल,
दिन हो चाहे हो रात,
दूरभाष से कर लो बात।
मन्दिरों की है बात निराली,
मण्डी हो चाहे हो मनाली,
शिमला की है अपनी पहचान,
मालरोड पर घूम कर बढ़ाओ शान
हर जिले की है अपनी बोली,
नाच-गाने की अलग है टोली,
कुल्लू की है मशहूर शॉल,
मेरा हिमाचल बड़ा विशाल।

❋ युवराज शर्मा

बाल कहानी

पश्चाताप

मुख्य शिक्षक मुकेश शर्मा कक्षा में छात्र-छात्राओं की कापियों की जांच कर रहे थे। तभी एक व्यक्ति उनके पास आया। उसने मुख्य शिक्षक शर्मा जी का अभिवादन किया। शर्मा जी ने उन्हें बैठने के लिए कहा। कुर्सी पर पसरते ही व्यक्ति बोला, 'मास्टर जी! आपसे एक बात पूछनी थी...? मेरा इकलौता लड़का सात साल का है...वह तीन वर्ष का था कि अचानक बीमार पड़ गया।... हम उसे डाक्टर के पास ले गए....डाक्टर की गलत दवा से वह अपंग हो गया....हालत ये है कि वह न ठीक से बोल सकता है न चल फिर सकता है...मैं उसे स्कूल में दाखिल कराना चाहता हूं....गत वर्ष भी मैं आया था....आप की जगह और अध्यापक थे...उन्होंने कहा कि यह दाखिल नहीं हो सकता...लेकिन मैंने सुना है कि सर्वशिक्षा अभियान एवं शिक्षा का अधिकार कार्यक्रम के अन्तर्गत किसी को स्कूल में दाखिल करने की मनाही नहीं है...' शर्मा जी ने व्यक्ति की बात काटते हुए कहा, 'हां-हां! यह सही है...आप अपने बच्चे को स्कूल में दाखिल कराएं... उसे शिक्षित करने का हर सम्भव प्रयास किया जायेगा...,व्यक्ति ने राहत की सांस ली और अगले दिन उसका बेटा रोहित प्रथम कक्षा में प्रविष्ट हो गया।

रोहित टांगों से लाचार था। हाथों से वह सब कुछ कर लेता। खाना खाने से लेकर पेंसिल से कापी पर लिखने आदि का काम भी बखूबी कर लेता। हाथों के सहारे घिसट कर दूर निकल जाता। पाठशाला के अध्यापकों के सामूहिक प्रयास से वह पढ़ना लिखना सीख गया। वह बोलता भी था लेकिन रुक-रुक कर, कुछ अस्पष्ट...। दूसरों को समझने में थोड़ी दिक्कत होती। हां वह हम उमर बच्चों के साथ प्रसन्न रहता। उनसे खूब घुल मिल गया था। बाल सुलभ शरारतें-हरकतें भी करता। एक अध्यापिका को छोड़ शेष सभी पाठशाला के कर्मचारी रोहित से प्रेम मिश्रित व्यवहार करते।

मैडम अंजना को स्कूल स्टाफ का रोहित के लिए अनावश्यक प्रेम-प्रदर्शन फूटी आंख नहीं भाता था। वह न जाने क्यों रोहित से उखड़ी-उखड़ी रहती। रोहित के लिए उसके मुख से कभी प्यार के दो बोल नहीं उमड़े। दूसरे शब्दों में वह रोहित से घोर नफ़रत करती थी। वह उसे स्कूल में प्रवेश दिलाने के हक में नहीं थी।

समय पंख लगाकर उड़ने लगा।

रोहित अब तीसरी कक्षा का छात्र बन चुका था। लेकिन मैडम अंजना के उसके प्रति व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह उसे उसकी हरकतों पर डांट देती। कभी-कभी हाथ भी चला देती। मुख्य शिक्षक शर्मा जी ने इसके लिए उसे चेतावनी भी दी-बच्चों को किसी भी प्रकार का दण्ड देना अपराध है... विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को तो बिल्कुल नहीं....। खैर! समय कुछ और सरका। सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से रोहित को 'व्हील चेयर' उपलब्ध कराई गई। उसे छात्रवृत्ति भी मिलने लगी। अभिभावक प्रसन्न एवं संतुष्ट थे।

एक दिन अपराह्न के समय मैडम अंजना बच्चों की कापियों की जांच कर रही थी। उसने अपना बैग कुर्सी के सहारे लटका रखा था। उसने कापियां चेक करने के लिए बैग से लाल पैन निकाला था और बैग की जेब बन्द करना भूल गई थी। जेब में सौ और पचास रुपये के नोट दिख रहे थे। मैडम कापियों की जांच करने में तल्लीन थी। अनायास रोहित घिसटता हुआ बैग तक पहुंच गया और जोर से दोनों हाथों को हिलाकर चिल्लाने लगा-'मैम.....सांप. ...मैं.....म...म...सा....प...' मैडम का ध्यान भंग हुआ। उसने अपने बैग की तरफ देखा...हां तो...पैसे चुराने का इरादा था.... कंबख्त....सभी ने सिर पर चढ़ा रखा है...। मैडम अंजना ने आव देखा न ताव और रोहित पर लगी थप्पड़ों-घूंसों की वर्षा करने.....। शोर सुनकर सारा स्टाफ इकट्ठा हो गया। मैडम को मौका मिल गया। निकाली दिल की भड़ास.. .। और प्यार करो...मैं कहती हूं ऐसे बच्चों को स्कूल में दाखिल नहीं करना चाहिए...सर जी! पैसे देखकर इसका दिल भी बेइमान हो गया....।' मैडम अंजना ने मुख्य शिक्षक शर्मा जी को वस्तुस्थिति से अवगत कराया। शर्मा जी का ध्यान अचानक बैग की ओर गया। सौ और पचास के नोटों के बीच एक काला भयानक सांप बैठा था। शर्मा जी सब कुछ समझ गए। मैडम अंजना को काटो तो खून नहीं। वह कभी रोहित को तो कभी बैग में छुपे सांप को देखती। तो रोहित उसे सांप से खबरदार कर रहा था। रोहित सुबक-सुबक कर रोता जाता और सांप को भी देखता। शर्मा जी ने लम्बा डण्डा लेकर बैग को कुछ दूर फेंक दिया। सांप बैग से निकल गया। शर्मा जी ने उसे मार गिराया। सबने राहत की सांस ली। मैडम अंजना पश्चाताप के आंसू बहा रही थी। एक लाचार अपंग छात्र ने उसकी जान बचाई थी जिससे वह घृणा करती थी। मैडम अंजना ने रोहित को सबके सामने गोद में उठा लिया और उसे चूमा-प्यार किया। उसकी आंखों से अब भी आंसू बह रहे थे। लेकिन आंसुओं में पश्चाताप एवं आंखों में रोहित के प्रति अपार स्नेह का समुद्र लहरा रहा था।

● देसराज पुष्प

रंग भरो -सर्वजीत

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

काहणी

सयाणा

● कुलदीप चन्देल

गरधारी तां जे गल करदा तां सयाणी गल करदा। सब तिसदी गल सुनणे जो खुश रैंदे थे। पर तिसदी घरेऔली नी तिसदी गल मनदी थी। से हर वक्त नक ही चढ़ाई रखदी थी। तिसा जो गांवे च कई नकचड़ी बी पिठी पिछे गलाई देंदे थे। तिसा जो पता था पर से अपनी गल बात ते मजबूर थी।

इक दिन तिसा अपने लाड़े जो बोलया, 'जा जाई के खेत्रां ते गन्ने ली आओ।'

गरधारी चली पेआ गन्ने लयौणे। खेत्र दूर थे। इस खातर जाने जो तिसजो टैम लगी गया। खैर जी तिनी दराटिआं कने दस बारह गने दे टुकड़े कित्ते होर लेई चलया सिरे पर पंड बनही के। रसते च तिसजो गांवे दे छोकरू मिलदे गए होर से तिसते गन्ने मंगदे गए। तिनी इक इक गन्ना तिनहां जो पकड़ाई ता। तां जे से घरे पुजया तां इक ही गन्ना रेहा।

'सयाणया ली आया गन्ने?' तिसदिआ लाड़िया पुछया।

'लयाया त था पर इक ही बचया। रसते च छोरूआं जो बंडी ते।'

ऐहड़ा सुनणे दी देर थी कि तिसदिआ लाड़िया गन्ना खोया होर लाड़े जो तिसदी दो टकाइयां।

'तिजो गन्ने लयौणे पेहजया था कि छोरूआं जो लुपड़ाने जो पेहजया था। छोरूआं होर बंदरां सौगी मुंह लगाना तां पहलयाण किती होणा?'

सयाणिए तूं गन्ना चूप चुप करी के। इहां नी मूड खराब कर। गरधारिए ऐहड़ा बोली के लाड़िया ते पिंड छुड़ाई लेआ था। पर तिसजो गन्ने दा पटराला सटदे प्रेमुए हौलदारे देखी लेआ था। से ताहण तां चुप रेहा पर ताहण जे गरधारी टकरोया तां तिनी मखौले च गलाई ता, 'कैं थी लाड़ी पुड़कूदी? गन्ने दी टकाया करदी थी।'

'इक ही पेई यरा।'

आहो, इक पेई सेही लेई। दो पइयां किधर गइयां? तिन...।'

'बस कर हौलदारा। तूं तां पिछे ही पेई गया। मेरी लाड़ी थी जे गुस्से च तिसा टकाई ती तां क्या होया? फेरी दुख बी तिसा ही मनाया। माफिआं बी तिसा ही मंगिआं।' हौलदारे दी गल कट्टी के जवाब दितया गरधारिया।

गरधारी फेरी बोलया, 'ऐ गुस्सा बड़ा चंटाल होंदा। गुस्से च आदमी कई कुछ करी लैंदा। जे हाऊं बी तिसा जो मारने लगदा तां पेई गई थी न छिंज।'

'हां, ऐ गल तां ठीक ही।' हौलदार सिर हलाई के बोल्या।

कुछ दिनां बाद ऐ गल सारे गांवे च फैली गई। पेही गरधारिए दी लाड़िया तिसजो गन्ने दी मारी। जितने मुंह उतनी पाखा। कई तां ऐहड़ा बोलदे पेही लाड़े लाड़ियां दी अप्पू बिचिए खूब टिहस मुंगली होई। सारे गांवे च इस गल्ला दी खूब हासी पेई गई। सयाणा टहसोया लाड़िया ते। सयाणा टहसोया लाड़िया ते। सारे खा इको ही गला दी चर्चा। जनाना दा मैहजर लग।

इक दिन गांवे च इक समस्या पैदा होई गई। इक कुड़िया अपनी मर्जिया दा ब्याह कराई लेआ। लोक लगे गलांदे फलाणे दी कुड़ी नठी गई। नक बढ़ाई रखया अपने मापयां दा। गांव बी बदनाम करी ता। सबनी दे मुंहे इक ही गल चढ़ूदी थी। लोकां दिआं कुड़ियां मुंडुआं दी गल्लां इहां बी सब चकदे। अपने घरे सैंते तां पता चलदा। हौलदारे बी ऐ गल गरधारी दे घरे मंजे पर बैठी के खूब चटखारे लाई के सुणाई। ऐ सुणी के तिसदी लाड़ी बोली, 'तां क्या होया जे

कुड़िया अपनी मर्जी ते ब्याह कराई लेआ। ब्याह तां कुड़ी मुंडू दी पसंद दा ही होना चांहिदा। ऐ कोई गांई मैहस दा सौदा थोड़े ही पेही इस खुंडे ते खोली उस खुंडे पर बहनी ती।'

'माराज क्या गलांदे तुसें?'

'हौलदार जी ठीक गलांदी हाऊं। जमाना बदली गया। जमाने सौगी नी चलंगे तां पिछे रही जांगे।' से फेरी बोली।

इतने च हौलदारे जो घरा ते हक पेई होर से जफू बट्टी के चली गया। गरधारी होर तिसदी जनाना तिसजो जांदे देखदे रहे। ताहण जे से घरे बड़ी गया जाईके तां गरधारी बोलया, 'तूं तां इसदे पिछे ही पेई गई।'

'पिछे क्या पौणा? लोकां दिआं कुड़ियां दी हासी चकदे। अपने घरे फूको अग तां लगदा सेक।'

'तैं अड़िए गल तां सयाणी कित्ती। सच गलाया अजकल जमाना बदली गऊदा। हुण से गलां किती रहोदीआं।'

'पर मनदे हौलदारे सांही टौंडे। क्याड़ी चक्की चक्की के लगूदा था लोकां दिआं चुचाकिआं करने। मेरा जिऊ बोलदा गीता के जाई के तिसा जो बोलूं पेही इहां ही दुखी मत हो। जे बाहमणां दी कुड़िया राजपूतां दे मुंडुए सौगी ब्याह कराई लेआ तां क्या होया? हुण जात पात दिआं दिवारां खतम हिआं।'

'ठीक सोचदी तूं। जाई आयां होर करी आयां तिसा कन्ने गल बात। हाऊं बी गलाई लैंगा तिसा दे लाड़े सौगी।'

हालांकि गरधारी दी लाड़ी बड़ी गुस्सेबाज समझी जांदी थी। सारे गांवे च से मशहूर थी। पर तिहां जे तिसा जात पात ते खिलाफ सिर चकया तिहां ही तिसा दी पढ़े लिखुएं तारीफ किती। जवान मुंडू कुड़ियां तिसा सौगी होई गए। तिसा जो लाड़े दी बी सुर्पोट मिली गई। इस खातर तिसा दा मुंह खुलया तां खुलदा चली गया।

हौलदारे सांही कइयां दे तिसा मुंह बंद करी ते। लोक गरधारिए दा नांव लेई के लगे बोलने सयाणा क्या था सयाणी तिसते बी अगे टप्पी गऊदी।

कुछ दिनां बाद गीता दी कुड़ी होर जवाईं गरधारी होर तिसदी लाड़िया जो बजार मिले। तिनहें तिनहां ते अखी चुराने दी कोशिश किती पर गरधारिए हक पाई, 'सुमन बच्चा राजी तूं?'

'हां, चाचा जी राजी ही।' तिसा कुड़िया हथ जोड़ी के नमस्ते करदे होए जवाब दित्तया। होर तिसा दे लाड़े तिनहां के फट मथा टेकया।

'खुश रहो।' शीश देई के बोलया गरधारी।

फेरी सुमन तिसदिआ लाड़िया दे गले मिली। तिसा दे लाड़े पैर बंदे। कुछ देर खड़ी के से गल बात करदे रहे। इक दूजे दा हाल चाल पुछदे रहे।

'अम्मा केहड़ी?' सुमना पुछया।

'ठीक ही।समझाई तू दी मैं। मैं पुन्या मोखणी। तदयाड़े आई जाणा तुसें दूं जणया पट्टिया जो।'

'ठीक हा चाची। पर अड़यो डर लगदा।'

'डर कासदा। माहरे होंदे तुसां जो डरने दी जरूरत नी। तुसें किसी दा कुछ खादूदा नी हा। चोरी ठगी नी कितूदी।' गरधारी बोलया था।

'खरा तां असें चलदे हुण। आई जायों बच्चा तदयाड़े दोनों जणे।'

ऐहड़ा बोली के गरधारिए दिआ लाड़िया सौ सौ दे दो नोट पर्से ते नकाले। इक सुमना जो दितया होर दूजा तिसा दे लाड़े जो।

'ऐ बच्चा शगुन हा। ऐ शुभ होंदा। ना नुकर नी करदे।' तिसा समझाया होर से चली गए।

पुन्या बी आई गई। गरधारी होर तिसदी लाड़ी खुश थे। तिनहें गीता होर तिसा दा टब्बर समझाई तू दा था। पेही जे सुमन होर तिसा दा लाड़ा औंगे तां अग्गे होई के गलाना। इहां मुंह नी मड़ेकी रखना।

पंडते उदयापने दी पूजा कराई ती। फेरी सेजया मनसणे लाई ताहण से दोनों लाड़ा लाड़ी पहुंचे गए। बालकें शैला पाई ता, 'सुमन दीदी आई। सुमन दीदी आई।' होर सुमन पर्से ते इक इक चाकलेट कढ़ी के बालकां दे हथे पकड़ांदी रेही।

मनस मनसाईया दा कम खतम होने ते बाद रोटी खाने दी बारी आई। बैंठी बैंठने लगियां तां नवें ब्याहुदे लाड़ा लाड़ी बी गरधारिए बैंठी बठाले होर सामने खड़ी के तिनहां जो रोटी खुलाई।

ऐ सब देखी के पंचायती दा प्रधान बोलया, 'गरधारी सची मुनी जो ही सयाणा हा। देख केहड़ी सयाणी गल कित्ती इनी।'

'हां, प्रधान जी, इसदा नांव इहां ही थोड़ी रखूदा सयाणा। सयाणा मतलब समझदार। लाड़ी इसदी बशक गुस्सैल ही पर हाई इक सांही ही सयाणी।' प्रेमा हौलदार था।

गरधारी होर तिसदी लाड़िया दी सारे गांवे च खूब चर्चा होया करदी थी। तिनहां दी खलाफत करने औले कहट थे होर तारीफ करने औले ज्यादा। तिनहा दी कोशिशां ते सबकुछ ठीक ठाक होई गया था। सुमन होर तिसा दे लाड़े जो कुडिआ दे मापयां इज्जत मान देई के घरे सदया। अड़ोसिएं पड़ोसिएं बी शगुन पाए। बोलया ऐहड़ी बांकी जोड़ी मिली। कमाल होई गया।

इहां ही थोड़ी लोकें गरधारिए दा नांव सयाणा रखी तूरा। कुछ तां कुछ तिस च गुण होंगा तां ही तिसजो सयाणा बोलदे। ऐ मैहजर हुण कई जगह लोकां पाई रखूदा था। अंदरखाने बहुत लोक खुश थे। ऐ रवाज चली पओ तां जात पात दे सारे चहगड़े चाहटे खतम होई जाने। इक सोहणा जेआ सयाणा जेआ समाज बनणा।

<u>मंडयाली कबता</u>

हाऊं हासां था कधी

हाऊं हासां था कधी
दूजे री पीड़ा जो देखुआं
नइं जाणदा था तिन्हारी पीड़
डाक्टरा री फीस
दवाइया रा खरच
ओरे परेखो बाउरे झे दौड़दे
पैरा री छटपटाहट
मंदरा रे दोराजे पर
भीख मांगदे रहे स्यों झे जिंदगी री
देइ के आपणी जिंदगी रा बास्ता
हाऊं समझी नी सकेया दुख तिन्हारा कधी
करदे रहे सेवोआ सेओं
आपणा सुख छाडुआं
फलांदे रहे हाथ मद्दा रे कठे
आपणा हअंकार छाडुआं
जो बैइठी रहे चुप
हाखी मंझ आंसु ल्उआं
कोसदे रहे किस्मता जो
रोदें रहे ल्हुखुआं-ल्हुखुआं
हाऊं शब्दा रा बुणी बुणी के जाल
डवांदा रहेआ मजाक
बधांदा रहेआ तिन्हारा दुख
आज----
मेरी हासी मरी गइरी
सारा मजाक सइ गइरा
बमार पइरा हाऊं एथी
करेआ करांहा मरी री हासीओ
ज्उंदा करने रा असफल प्रयास
शायद मुंजो होएआ कराहां
आपणी भूला रा एहसास।

-पवन चौहान

लोक कथा

एक बुद्धि

● हीरा सिंह कौशल

एक बारी गल्ल ही कि मच्छुयारे जाल पांदे-पांदे चली री थे सारा ध्याड़ घूमे पर तिन्हां जो केसी भी खाड्डा मंझ कोई भी मच्छी या मिनका-मगर नी मिलया जेबे जे सांझ हुई गयी होर- थोड़ा-थोड़ा न्हेरां लगी री थी हुंदा तेबे एक आली मंझ पूजी गये। तेथी तिन्हे देखा भई ऐथी बड़े-बड़े मगरमच्छ मच्छीयां, मिनके कने कच्छुए हे सेयो बड़े हुश हुए। पर रात हुई गयी री जिन्हे मच्छुयारे बोल्या जे काल भ्यागा ऐसी आसा जाल वाणहां होर आल्ली मंझा रे सारे लयी जाणे। एक कच्छुये तिन्हां मच्छुयारेया री गल्ल सुणी लई।

तिने कच्छुए मगरमच्छ, मच्छीयां होर मिनकेया जोगल्लाया कि मच्छुयारे काल भ्यागा आवण होर ऐस तलाबा (आल्ली) जो जाल वाहणा होर आसे सारे लयी जाणे ऐहड़ा मच्छुयारे गल्लायां कराहे थे। हाऊं सोचया कराया कि ऐथी ते होर केथी जो चली जांहे। ऐहड़ा सुणी के मगरमच्छ बोल्या मैं तिन्हा जाल ही जिस्म फूलाई के फाड़ी देणा मां तां ऐथी ते कथी भी नी जाणा, मच्छी होर मिनके बोल्या आसा ऐड़ी दौड़ वाणही मच्छुयारे जाला पर आऊणा ही नहीं होर जगह-जगहा दौड़ना मच्छुयारे अपने बाबा जो रोणा। कच्छुआ बोल्हा तूसारी मरजी हाऊ तो कमजोर प्राणी ही मैं ता ऐथी ते चली जाणा तथा होरत ठिकाणा करना। भई हाऊ तूसा जो फेरी बोल्या करांहा ऐजो ठकाणे जो छाड़ी देया न तो वादा ते पछताणा। जा जा डरायल्डू आसा रे ऐथी मजे लगी रे। तू जां आया बड़ा डरपोक मगरमच्छ, मच्छीये, मिनके गल्लाया। भई तूसा री मरजी हाऊ ता चलया कच्छुए बोल्या।

भ्यागा मच्छुयारे होरी आल्ली वले आए होर तेथी आपणा जाल सटया। मगरमच्छ बड़ा उटकया पर मच्छुयारे तेसरा पिच्छा नी छड़या होर जालां मंझ फसी गया। मच्छी ये होर मिनके भी बड़ी दौड़ा मारी केथे दौड़ो कभे केथी दौड़ो पर मच्छुयारे तिन्हा जो भी आपणे जाला मंझ लई लेया। होर मच्छुयारे जाले जो कंधी पर लटकाए होर चली पए। रास्ते पर कच्छुए देखया तेसरे साथी जाला मंझ लटकी रे देखे तिन्हे देखी के कच्छुआ बोलया-

संसर बुद्धि आवले चलदे
लटके वह बुद्धि आवले पाए त्वाणे,
भला हो एक बुद्धि आवले
जिन्हे पहले किते ठकाणे।

ग्रामीण क्षेत्रों में नियुक्त होंगे 2000 जल रक्षक

(पृष्ठ 1 का शेष) सुन्दरनगर के लिए 3.31 करोड़ रुपये देने की घोषणा की।

मुख्य मंत्री ने कहा कि मुख्य मंत्री ग्राम पथ परिवहन योजना के अन्तर्गत नकदी प्रोत्साहन और कर में छूट दी जाएगी ताकि लोगों को प्रदेश के अन्दरूनी क्षेत्रों के बस रूट लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। 29 सीटों वाली बसों के लिए यह प्रोत्साहन 2000 रुपये प्रतिमाह, 22 सीटों वाली बसों के लिए 1500 रुपये प्रतिमाह और 17 सीटों वाली बसों के लिए 1000 रुपये प्रतिमाह होगा।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार राज्य के तीव्र विकास के प्रति कृतसंकल्प है और समाज के सभी वर्गों का कल्याण सुनिश्चित बनाया जा रहा है। गत चार वर्षों के दौरान सरकार की सभी नीतियों एवं कार्यक्रमों को इन सभी वर्गों पर केन्द्रित किया गया। कृषि और संबद्ध गतिविधियों पर प्रदेश के कुल बजट का 12 प्रतिशत खर्च किया जा रहा है। गत चार वर्षों के दौरान इस क्षेत्र में 1100 करोड़ रुपये से अधिक राशि व्यय की गई। उन्होंने कहा कि प्रदेश को वर्ष 2010 में राज्य कृषि नेतृत्व अवार्ड भी प्राप्त हुआ है।

प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि वर्ष 2009 में आरम्भ की गई 323 करोड़ रुपये की 'पंडित दीन दयाल किसान बागवान समृद्धि योजना' ने राज्य के किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में सफलता हासिल की है। पॉलीहाउस निर्माण एवं सूक्ष्म सिंचाई पर 80 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत प्रदेश में 16,500 पाली हाउस स्थापित किए जाएंगे और सूक्ष्म सिंचाई के अन्तर्गत 20,000 हेक्टेयर क्षेत्र को लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों के दौरान प्रदेश में किसानों को 75 करोड़ रुपये का उपदान दिया गया है।

मुख्य मंत्री ने कहा कि जैविक कृषि और सब्जी उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए गत वर्ष प्रदेश में 321 करोड़ रुपये की एक अन्य महत्वाकांक्षी कृषि विविधीकरण योजना आरम्भ की गई, जो किसानों की आर्थिकी को सुदृढ़ करने में कारगर सिद्ध होगी।

प्रो. धूमल ने कहा कि वर्तमान सरकार किसानों एवं फल उत्पादकों की संरक्षक है। मण्डी मध्यस्थता योजना के अन्तर्गत समर्थन मूल्य देकर फल उत्पादकों को उनके उत्पाद का बेहतर मूल्य सुनिश्चित बनाया जा रहा है।

मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश में 'दूध गंगा योजना' के कार्यान्वयन पर 300 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं और लाभार्थियों को ऋण सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत सामान्य श्रेणी के लाभार्थियों को 25 प्रतिशत व अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों को 33 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है।

श्रमिकों के कल्याण के प्रति सरकार की वचनबद्धता दोहराते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार ने दिहाड़ीदारों की दिहाड़ी 75 रुपये से बढ़ाकर 120 की है तथा 8 वर्ष का सेवाकाल पूरा कर चुके सभी दिहाड़ीदारों एवं अनुबंध कर्मियों की नियमित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार कर्मचारियों की जायज़ मांगों को प्राथमिकता पर हल कर उनके हितों को भी सुरक्षित बना रही है।

राज्य में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा श्रेणी के लोगों के तीव्र विकास की उनकी सरकार की वचनबद्धता को दोहराते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि प्रशासन की बागडोर संभालने के तुरंत बाद अनुसूचित जाति उप-योजना के अन्तर्गत आवंटन को जा रही राज्य की कुल योजना का 11 प्रतिशत से बढ़ाकर 25 प्रतिशत किया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य में इस वर्ष अनुसूचित जाति उप योजना के अन्तर्गत 816 करोड़ रुपये व्यय किए जा रहे हैं ताकि विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन से अनुसूचित जाति के लोगों का तीव्र विकास किया जा सके। मुख्य मंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार ने सामाजिक सुरक्षा पैंशन को 200 रुपये प्रति माह से बढ़ाकर 300 रुपये प्रति माह किया है तथा 79,073 नए पात्र व्यक्तियों को यह पैंशन सुविधा प्रदान की जा रही है। सरकार ने गत वर्ष सभी लंबित मामलों को निपटाया है और राज्य में अब सभी पात्र व्यक्ति यह पैंशन सुविधा प्राप्त कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण एक अन्य क्षेत्र है, जिस पर सरकार ने ध्यान केंद्रित किया है। वर्ष 2008 से पंचायती राज संस्थाओं वं स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत सीटें आरक्षित की हैं। यह सुविधा प्रदान करने वाला हिमाचल प्रदेश देश के कुछेक गिने चुने राज्यों में से एक है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 'माता शबरी महिला सशक्तिकरण योजना' आरम्भ की गई है, जिसके अन्तर्गत गरीब परिवारों की महिलाओं को गैस कुनैक्शन एवं स्नोव की खरीद के लिए 50 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि राज्य में अलग से महिला कल्याण विभाग स्थापित किया गया है ताकि उनकी बेहतरी के लिए आरम्भ किए गए कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित बनाया जा सके।

मुख्य मंत्री ने कहा कि सड़क, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताएं हैं, क्योंकि ये क्षेत्र आम आदमी और राज्य के समग्र विकास से जुड़े हैं। गत चार वर्षों के दौरान प्रदेश में 3280 किलोमीटर नई सड़कों एवं 260 पुलों का निर्माण किया गया है। सरकार ने 250 या इससे अधिक की जनसंख्या वाले प्रत्येक गांवों को सड़क से जोड़ने की योजना तैयार की है। इसके पश्चात, अन्य गांवों को भी सड़कों से जोड़ा जाएगा।

मुख्य मंत्री ने कहा कि सरकार हिमाचल प्रदेश को देश का शिक्षा केंद्र बनाने के लिए प्रयासरत है, जिसके लिए राज्य में स्तरीय शिक्षा संस्थान एवं विश्वविद्यालय आरम्भ किए जा रहे हैं। सरकार ने शिक्षकों के 20,000 पद भरने को स्वीकृति प्रदान की है, जिसमें से 80 प्रतिशत की भर्ती की जा चुकी है और शेष की भर्ती प्रक्रिया जारी है।

मुख्य मंत्री ने कहा कि सरकार लोगों को उनके घरों के निकट बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित बना रही है जिसके लिए 800 एम.बी.बी.एस. और 350 आयुर्वेदिक चिकित्सकों की भर्ती की गई है। उन्हें प्रदेश के दूर-दराज क्षेत्रों में तैनात किया गया है। उन्होंने कहा कि अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएं जैसे 'अटल स्वास्थ्य सेवा योजना', 'मातृ सेवा योजना', 'मुख्य मंत्री विद्यार्थी स्वास्थ्य योजना', 'मुस्कान' तथा 'पण्डित दीन दयाल औषध सेवा योजना' कार्यान्वित की गई है ताकि लोगों को राज्य में ही बेहतर उपचार की सुविधा प्राप्त हो सके।

मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य के संसाधनों के सृजन के लिए जल विद्युत दोहन, औद्योगिक एवं पर्यटन विकास को प्राथमिकता प्रदान की गई है। गत चार वर्षों के दौरान 1247 मैगावाट अतिरिक्त विद्युत निष्पादन किया गया तथा सरकार वर्ष 2015 तक 12,000 मैगावाट विद्युत निष्पादन की योजना पर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इस क्षमता के पूर्ण दोहन पर हिमाचल प्रदेश देश के समृद्ध राज्यों में से एक होगा।

मुख्य मंत्री ने कहा कि राज्य की औद्योगिक क्षमता का भी दोहन किया जा रहा है ताकि इससे राज्य की आय सृजन और स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके।

प्रदेश के लोगों को पारदर्शी, जवाबदेह एवं भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन उपलब्ध करवाने की अपनी सरकार की बचनबद्धता को दोहराते हुए प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि हिमाचल प्रदेश लोक सेवा गारंटी विधेयक लागू किया गया है, जिसके अन्तर्गत सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारी लोगों को निर्धारित समयावधि में लोक सेवाएं उपलब्ध करवाने के उत्तरदायी बनाए गए हैं। सेवाओं में विलम्ब करने पर उनके विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही और जुर्माने का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि विधानसभा द्वारा हिमाचल प्रदेश विशेष न्यायालय (सम्पत्ति की कुर्की और अधिहरण) विधेयक, 2011 को पारित किया गया है, जिसके अन्तर्गत भ्रष्ट तरीकों से अर्जित संपत्ति के अधिहरण का प्रावधान किया गया है। ऐसे मामलों के शीघ्र निपटरे के लिए विशेष अदालतें स्थापित की जाएंगी।यह लोगों को भ्रष्टाचारमुक्त प्रशासन तथा निर्धारित समयावधि में लोक सेवाएं सुनिश्चित करने की दिशा में यह पग उठाए गए हैं। इस दिशा में कई अन्य प्रभावी पग भी उठाए गए हैं।

मण्डी जिले में विकास का जिक्र करते हुए मुख्य मंत्री ने कहा कि मण्डी के निकट कमांद में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान स्थापित किया गया है और मण्डी में ही ईएसआई अस्पताल स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गत चार वर्षों के दौरान 748 किलोमीटर नई सड़कें और 66 पुलों का निर्माण किया गया है। इस अवधि के दौरान 4009 बस्तियों में पेयजल सुविधाएं प्रदान की गई हैं।

लोक निर्माण मंत्री श्री गुलाब सिंह ठाकुर, सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री श्री रविन्द्र सिंह रवि, बागवानी मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री जय राम ठाकुर, परिवहन मंत्री श्री महेन्द्र सिंह, विधायक एवं हि.प्र. राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष श्री दिले राम तथा विधायक श्री रूप सिंह ठाकुर, कर्नल इन्द्र सिंह, श्री हीरा लाल एवं श्रीमती विनोद चंदेल, पूर्व विधायकगण, बोर्डों व निगम के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, मुख्य सचिव श्रीमती राजवंत संधू, पुलिस महानिदेशक, डा. डी.एस. मन्हास और अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर मौजूद थे।

इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम और पुलिस बैंड का प्रदर्शन भी किया गया।

राज्यपाल व मुख्य मंत्री द्वारा एमओएच फारुख के निधन पर शोक व्यक्त

राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह ने केरल के राज्यपाल श्री एमओएच फारुख के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उनका गत दिनों निधन हो गया था। राज्यपाल ने अपने शोक संदेश में कहा कि फारुख एक प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने राष्ट्र एवं लोगों को बहुमूल्य सेवाएं प्रदान कीं। उनके द्वारा दी गयी सेवाओं को सदैव याद रखा जायेगा। मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने भी श्री फारुख के निधन शोक व्यक्त किया है। राज्यपाल तथा मुख्य मंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक संतप्त परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

लोगों की समस्याओं का समाधान सरकार की प्राथमिकता: मुख्य मंत्री

मुख्य मंत्री प्रो प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों नूरपुर विश्राम गृह में लोगों की समस्याएं सुनीं तथा अधिकांश का मौके पर ही निपटारा किया गया।

इस अवसर पर प्रो धूमल ने कहा कि प्रदेश सरकार लोगों की समस्याओं एवं शिकायतों के निदान को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। इस के लिए प्रशासन जनता के द्वार कार्यक्रम इत्यादि नियमित रूप से आयोजित करने के दिशा-निर्देश भी दिए गए हैं ताकि लोगों की समस्याओं का समाधान उनके घर-द्वार पर हो सके। उन्होंने कहा कि आम आदमी प्रदेश सरकार की हर नीति व कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु है, जिनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर व उनके तीव्र सामाजिक-आर्थिक उत्थान को सुनिश्चित बनाकर इन्हें कार्यान्वित किया जा रहा है। गत चार वर्षों में प्रदेश सरकार की प्रगतिशील, विकासोन्मुखी तथा कल्याणकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों से हर परिवार व व्यक्ति को लाभान्वित करने का प्रयास किया गया है। इस अवसर पर सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य मंत्री श्री रविंद्र सिंह रवि, विधायक राकेश पठानिया, वूल फेडरेशन के अध्यक्ष त्रिलोक कपूर सहित उपायुक्त कांगड़ा श्री आरएस गुप्ता, पुलिस अधीक्षक दिलजीत सिंह ठाकुर सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी भी उपस्थित थे।

योजना निष्पादन की समीक्षा बैठक आयोजित

मुख्य सचिव श्रीमती राजवंत संधू ने गत दिनों शिमला में प्रधान सचिवों, सचिवों और विभागाध्यक्षों के साथ वार्षिक योजना वर्ष 2011-12 के अन्तर्गत निष्पादन और 20 सूत्रीय कार्यक्रम कार्यान्वयन की समीक्षा की।

मुख्य सचिव ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत आबंटित बजट का पूर्ण उपयोग सुनिश्चित बनाया जाए तथा यदि कोई कमी है तो उसे अगली तिहाही एवं वित्त वर्ष के अंत से पूर्व पूरा किया जाए। उन्होंने प्रसन्नता जताई कि अधिकांश विभागों ने लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं। उन्होंने कहा कि जो विभाग लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाए हैं, को व्यक्तिगत रूप से राज्य स्तर और विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों के समक्ष स्वीकृति के लिए मामला उठाना चाहिए, ताकि आबंटित धनराशि का सही दिशा में प्रयोग किया जा सके। श्रीमती संधू ने बाह्य रूप से वित्त पोषित परियोजनाओं पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया। बैठक में जानकारी दी गई कि 20 सूत्रीय कार्यक्रम के तहत लक्ष्य प्राप्त कर लिए गए हैं और कुछ मदों में राज्य ने लक्ष्यों से आगे जाकर कार्य किए हैं। प्रधान सचिव योजना डा. श्रीकांत बाल्दी ने मुख्य सचिव तथा अन्य का स्वागत करते हुए कहा कि विभागों द्वारा सही रिपोर्टिंग की जानी चाहिए और आंकड़े कोषागार के आंकड़ों के साथ मिलने चाहिएं। प्रधान सचिव, सचिव और विभागाध्यक्षों ने बैठक में भाग लिया।

ग्रामीण सड़कों के निर्माण...

(पृष्ठ 1 का शेष) सड़क, बल्ह खण्ड में सिद्धयाणी से पाथा मार्ग, मण्डी जिले के सुन्दरनगर खण्ड में घासी नाला से देहवी मार्ग, बरोटी से डैहर मार्ग तथा हरा बाग में राष्ट्रीय उच्च मार्ग 21 से कुरारा मार्ग शामिल हैं। उन्होंने कहा कि 11 पुलों का निर्माण भी प्रस्तावित है, जिनमें तीसा सेवा सारानगर मार्ग पर कलौनी मोड़ पर, तीसा खण्ड में तीसा गनेड़ नेरा मार्ग (जांगरा से ख्वाजा) पर, प्रयुंगल जटकान मार्ग पर भनेड़ा में, मैहला खण्ड में कारियां से भरियां कोहली मार्ग, चम्बा जिले के भरमौर खण्ड में निचली त्यारी, रैत खण्ड में रिरक मार्ग से सैली मार्ग पर, रियल बेला लुधियांचरान मार्ग, फतेहपुर खण्ड में बडुखर से बादपुर मार्ग, इंदौर खण्ड में बबिंदौरियां से परेल मार्ग, गंगथ से दोधा मार्ग तथा नूरपुर खण्ड में बदूही से बालदून मार्ग कांगड़ा अंचल के अन्तर्गत शामिल किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि सभी परियोजनाओं पर कार्य प्रगति पर है तथा प्रदेश सरकार अपने संसाधनों से इन पर व्यय कर रही है। सभी 37 परियोजनाओं पर बजट स्वीकृत होने से इनका कार्य तीव्र गति से कार्यान्वित होगा और निर्धारित अवधि समय में पूरा किया जाएगा। इन परियोजनाओं से पूरा होने से नजदीक के गांव को सम्पर्क मार्ग की सुविधा सुनिश्चित होगी तथा राज्य में सड़क नेटवर्क और सुदृढ़ बनेगा। अधिकतर मार्गों का कार्य पहले ही पूरा किया जा चुका है तथा पुलों का निर्माण कार्य पूरा होने पर स्थानीय लोगों को इन्हें समर्पित कर दिया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे सभी स्वीकृत परियोजनाओं के निर्माण कार्य में तेजी लाएं तथा सभी परियोजनाओं के निर्माण कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। सड़कें राज्य के लोगों की जीवन रेखाएं हैं तथा पर्याप्त रेल एवं हवाई परिवहन सेवाएं उपलब्ध न होने के कारण समूचा संचार सड़क नेटवर्क पर ही निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि सड़कें प्रदेश सरकार की हमेशा से प्राथमिकता रही है तथा विभिन्न बाहरी वित्त पोषण एजेंसियों से धनराशि उपलब्ध करवा कर सड़क नेटवर्क को विस्तार देने से प्रभावी पग उठाए गए हैं।

'हर गांव की कहानी' योजना...

(पृष्ठ 1 का शेष) पुरस्कार के साथ अब राज्य द्वारा गत चार वर्षों में जीते गये कुल पुरस्कारों की संख्या 52 हो गई है, जो प्रदेश के विकास एवं उपलब्धियों के इतिहास में अद्वितीय है। गत चार वर्षों के दौरान राज्य में पर्यटन विकास गतिविधियों को नये आयाम प्रदान किये गये, जिसके न केवल सकारात्मक परिणाम सामने आये हैं, बल्कि राज्य ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार भी जीते हैं। इसके परिणामस्वरूप हिमाचल प्रदेश विश्व में पर्यटन गंतव्य क्षमता का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। राज्य ने कॉफी टेबल बुक 'हर घर कुछ कहता है' का प्रकाशन किया है, जिसमें शिमला शहर के धरोहर भवनों को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का जिक्र किया गया है। शिमला के महत्वपूर्ण भवनों के ऐतिहासिक पहलुओं को जानने के उत्सुक व्यक्तियों एवं शोधकर्ताओं ने इस पुस्तक को हाथों-हाथ लिया है। यह राज्य में धरोहर पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास है।

उन्होंने कहा कि भारी भीड़, बढ़ते यातायात तथा शहरी क्षेत्रों के प्रदूषण से दूर पर्यटकों के ठहराव के दृष्टिगत राज्य में 'होम स्टे' योजना आरम्भ की गई है। इसके दृष्टिगत ग्रामीण अपने आवासों का होटल इकाइयों के तौर पर पंजीकरण करवा सकते हैं ताकि गांवों में ठहरने के इच्छुक पर्यटकों को आवास तथा भोजन की सुविधाएं मिल सकें। बड़ी संख्या में प्रगतिशील ग्रामीणों ने अपने आवासों का पंजीकरण करवाया है तथा इसके आरक्षण की सुविधा इंटरनेट पर भी उपलब्ध है।

हिमाचल सर्वश्रेष्ठ ग्रीष्मकालीन...

(पृष्ठ 1 का शेष) निरन्तर आगे बढ़ रहा है और इसमें सुधार व गुणवत्ता के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पर्यटन उद्योग और प्रदेश के लोगों को इस प्रकार पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए आगे आना चाहिए कि बाहर से आने वाले लोग यहां के अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद भी ले सकें। उन्होंने कहा कि राज्य विभिन्न क्षेत्रों में अर्जित अपनी उपलब्धियों को भी प्रदर्शित करेगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश आज केवल पहाड़ी राज्यों के लिए ही नहीं, बल्कि देश के सभी राज्यों के लिए आदर्श बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश मे सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन क्षेत्र का योगदान लगातार बढ़ा है और वर्ष 2009 में लगभग 7 प्रतिशत से बढ़कर वर्तमान में यह 10 प्रतिशत हो गया है। हिमाचल प्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना को ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन अधोसंरचना विकास के साथ जोड़ा है। राज्य ने पिछले वर्ष 12 ग्रामीण सर्किट विकसित किए और 64 गांव में ग्रामीण पर्यटन गतिविधियां आरम्भ की गई हैं।

उन्होंने कहा कि बेरोजगार युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए प्रदेश के पर्यटन क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि पर्यटन को और अधिक विकसित किया जाना चाहिए ताकि प्रदेश में उच्च वर्ग के पर्यटकों की आमद को और बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश को अविस्मरणीय बनाने के लिए पर्यटन में गुणवत्ता को सुनिश्चित बनाए रखने की आवश्यकता है।

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2012-14 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

राष्ट्रीय मतदाता दिवस

नव पंजीकृत मतदाता सम्मानित

राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह ने कहा कि देश में हर वर्ष 25 जनवरी को 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' मनाने की परम्परा भारत निर्वाचन आयोग का निर्णय एक सराहनीय कदम है। उन्होंने कहा कि यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' को पूरे देश में एक साथ मनाया जा रहा है तथा प्रत्येक मतदान केन्द्र पर नये मतदाताओं को सम्मानित किया जा रहा है।

राज्यपाल गत दिनों शिमला में गेयटी थियेटर में दूसरे राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश को 25 जनवरी, 1971 के दिन पूर्ण राज्यत्व का दर्जा हासिल हुआ था, इसलिए प्रदेश के नागरिकों व मतदाताओं को इस दिन 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' तथा 'पूर्ण राज्यत्व दिवस' के रूप में दो-दो उत्सव मनाने का सौभाग्य मिलता है।

भारतीय निर्वाचन आयोग के प्रयासों की सराहना

उन्होंने कहा कि भारत की चुनाव प्रक्रिया की व्यापकता को विश्व स्तर पर सराहा जाता है तथा ऐसा भारत निर्वाचन आयोग के प्रयासों से ही संभव हो पाया है।

राज्यपाल ने कहा कि प्रजातांत्रिक इतिहास में 1952 से आज तक के समस्त चुनावों में भारतीय मतदाता ने अपनी गरिमा शक्ति एवं लचीलेपन से लोकतंत्रीय प्रणाली को सही साबित किया है तथा इसके अद्‌भुत परिणाम भी सामने आये हैं। आम जनता विशेषकर उच्च शिक्षित वर्ग, मीडिया तथा गैर सरकारी संगठनों, समाज में सम्मानित व प्रतिष्ठित व्यक्तियों से अपेक्षा है कि वे भी निर्वाचन आयोग तथा सरकार के प्रयासों में शामिल होकर आम मतदाता को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के प्रति जागरूक करें तथा स्वयं भी मताधिकार का प्रयोग करना सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि देश में पूर्ण लोकतंत्र का सपना तभी पूरा होगा, जब प्रत्येक मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेगा। उन्होंने सभी नव पंजीकृत मतदाताओं को बधाई दी जिन्होंने लोकतंत्र के इस मेले में अपनी सहभागिता दी। राज्यपाल ने इससे पूर्व इस मौके पर उपस्थित नागरिकों को शपथ दिलाई।

प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री नरेंद्र चौहान ने राज्यपाल का स्वागत किया तथा मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरुक करने के लिए चलाई जा रहीं गतिविधियों की जानकारी दी।

अतिरिक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री पी.एल नेगी ने इस अवसर पर भारत के निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन आयुक्त का संदेश पढ़कर सुनाया।

स्थानीय विधायक श्री सुरेश भारद्वाज, प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष श्रीमती रूपा शर्मा, नगर निगम आयुक्त डा. एम.पी सूद ओर भाषा एवं संस्कृति विभाग के निदेशक श्री राकेश कंवर सहित शहर के अन्य प्रबुद्ध नागरिक इस अवसर पर उपस्थित थे।

राज्यपाल श्रीमती उर्मिला सिंह शिमला में आयोजित राज्य स्तरीय राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर नव पंजीकृत मतदाताओं के साथ।

व्यावसायिक शिक्षा का सुदृढ़ीकरण कर रही है प्रदेश सरकार : प्रो. धूमल

राज्य सरकार प्रदेश के युवाओं को गुणात्मक एवं रोजगारन्मुखी शिक्षा प्रदान करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा के नेटवर्क को सुदृढ़ कर रही है, जिसमें निजी क्षेत्र का सहयोग भी लिया जा रहा है। जवाहर लाल राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, सुन्दरनगर में अभियांत्रिकी उपकरणों के लिए विश्व बैंक 12 करोड़ रुपये की सहायता देगा।

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों बेचनीधार (सुन्दरनगर) में एक विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए यह जानकारी दी। इससे पूर्व उन्होंने जवाहर लाल नेहरू राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज का प्रशासनिक एवं प्रथम शैक्षणिक खण्ड कॉलेज के विद्यार्थियों को समर्पित किया। कुल 107.42 करोड़ रुपये की लागत से पूरे होने वाले इस परिसर में उक्त कार्यों पर 38 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कॉलेज परिसर के दूसरे चरण की आधारशिला भी रखी, जिस पर अनुमानित 16.11 करोड़ रुपये खर्च होंगे। उन्होंने कहा कि कुल्लू, लाहौल स्पीति, बिलासपुर और सिरमौर जिले में पॉलीटेक्निक कॉलेज खोले जा रहे हैं। बिलासपुर में हाइड्रो इंजीनियरिंग कॉलेज और प्रदेश में एक आईआईटी खोला जा रहा है ताकि राज्य में व्यावसायिक शैक्षणिक अधोसंरचना को स्तरोन्नत किया जा सके। शिक्षकों और गैर-शिक्षकों के लगभग 500 पद सृजित किए जा रहे हैं। इसके अलावा प्रदेश में निजी क्षेत्र में 32 आईटीआई भी खोले जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमीरपुर में तकनीकी विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है ताकि सार्वजनिक व निजी क्षेत्र में व्यावसायिक शैक्षणिक पाठ्‌यक्रम पर नजर रखी जा सके। जवाहर राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज के माध्यम से सिविल और इलैक्ट्रॉनिकस के अलावा चार अन्य विषयों में डिग्री कोर्स की सुविधा प्राप्त होगी। इसी तरह, प्रदेश में अटल बिहारी वाजपेयी राजकीय इंजीनियरिंग एवं अलाइड सांईसिज कॉलेज भी खोले जा रहे हैं। कमांद में आईआईटी में कक्षाएं आरम्भ हो चुकी हैं, जिसके लिए राज्य सरकार ने आवश्यक भूमि और अन्य आधारभूत सुविधाएं प्रदान की हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश ने कांगड़ा जिला के छेब में राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान स्थापित कर पहल की है, जहां देश भर के विद्यार्थी प्रवेश के लिए आगे आ रहे हैं।

प्रो. धूमल ने कहा कि राज्य ने व्यावसायिक शिक्षा के प्रावधानों को प्राथमिकता दी है ताकि युवा अपनी क्षमता में वृद्धि कर रोजगार व स्वरोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें। प्रदेश ने आईटीआई की स्थानीय प्रबन्धन समिति में उद्यमियों को शामिल किया है ताकि उद्योगों की मांग के अनुरूप प्रशिक्षण एवं ट्रेड के अनुसार पाठ्‌यक्रम निर्धारित किया जा सके।

तकनीकी शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री एस.के. दास और तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा विभाग के निदेशक श्री विजय चंदन ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए प्रो. धूमल को 3.20 लाख रुपये का ड्राफ्ट भेंट किया। स्थानीय विधायक श्री रूप सिंह ठाकुर ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए सुन्दरनगर में इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए पर्याप्त धनराशि उलपब्ध करवाने और इसके लोकार्पण के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

कॉलेज की कार्यकारी प्रधानाचार्य श्रीमती विनीता आर्य ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

मुख्यमंत्री ने गिरते नैतिक मूल्यों पर चिंता जताई

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने प्रत्येक क्षेत्र में गिरते नैतिक मूल्यों पर चिंता जताते हुये कहा कि मीडिया की लोकतंत्र में 'वाचडॉग' की भूमिका होती है, और मीडिया को लोगों के समक्ष सत्य लाकर सभी को सही रास्ता दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। मुख्यमंत्री गत दिनों तारा बिजनैस ग्रुप द्वारा आरम्भ किए गये 'हिमाचल आजकल' चैनल के शुभारम्भ अवसर पर बोल रहे थे।

मुख्यमंत्री ने ग्रुप को शिमला से चैनल आरम्भ करने के लिए शुभकामनाएं दीं तथा कहा कि यह चैनल राज्य के हितों को सशक्त रूप से रखने में सहायक होगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश विकास के क्षेत्र में आदर्श बन कर उभरा है और विभिन्न टी.वी. चैनलों व अन्यों स्वतंत्र एजेंसियों द्वारा राष्ट्र स्तर पर किए गए सर्वेक्षणों में प्रदेश को देश भर में अग्रणी आंका गया है।

मुख्यमंत्री ने 'पेड न्यूज़' की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने आशा जताई कि यह चैनल प्रदेश के लोगों की भावनाओं का सम्मान करेगा और उन्हें गुणात्मक समाचार एवं विचारों से अवगत करवाएगा।

चैनल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री माधव कांत मिश्रा ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया तथा आरम्भ किए गए इस चैनल के विभिन्न आयामों की जानकारी दी। चैनल के एडिटर-इन-चीफ श्री कृष्ण भानु ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए मुख्यमंत्री को विश्वास दिलाया कि चैनल प्रदेश के दर्शकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा।

बागबानी मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री जय राम ठाकुर, सांसद प्रो. वीरेन्द्र कश्यप, विधायक सर्वश्री सुरेश भारद्वाज, डा. रामलाल मारकण्डेय, किशोरी लाल सागर, हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) सी.एम. शर्मा, सेना प्रशिक्षण कमाण्ड के चीफ ऑफ स्टाफ ले. जनरल राजेश कोछड़, पुलिस महानिदेशक डा. डी.एस मन्हास, विभिन्न निगमों एवं बोर्डों के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष तथा शहर के गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने निशाने बाजी में स्वर्ण पदक जीतने पर विजय को दी बधाई

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने हमीरपुर जिले के हरसौर गांव के निवासी श्री विजय कुमार को दोहा में आयोजित एशियाई निशानेबाजी चैम्पियनशिप में स्टैंडर्ड पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई दी है।

मुख्यमंत्री ने अपने बधाई संदेश में कहा कि भारतीय सेना में कार्यरत श्री विजय कुमार अब तक विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की निशानेबाजी प्रतियोगिताओं में 139 पदक जीत चुके हैं। श्री विजय कुमार लंदन में इस वर्ष आयोजित होने वाली ओलम्पिक खेलों के लिए पहले ही रैपिड फायर वर्ग में कोटा हासिल कर चुके हैं। उन्होंने आशा जताई कि श्री विजय कुमार भविष्य में भी देश और प्रदेश का नाम रोशन करते रहेंगे।

बागबानों को शीघ्र उपलब्ध होगी खाद

बागवानी एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री नरेन्द्र बरागटा ने कहा कि प्रदेश में खाद की कोई कमी नहीं है।

श्री बरागटा गत दिनों यहां खाद की आपूर्ति तथा बागबानी गतिविधियों से संबंधित कार्यों के लिए आयोजित समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे।

बागबानी मंत्री ने कहा कि शिमला जिले तथा सेब उत्पादक क्षेत्रों में हो रही भारी बर्फबारी के कारण आपूर्ति में विलम्ब आया था, लेकिन बागीचों में खाद डालने का समय व उचित आद्रता होने के कारण बागबानों को एक-दो दिन में कॉम्प्लैक्स और एमओपी खाद उपलब्ध करवा दी जाएगी। उन्होंने कहा कि 4000 मीट्रिक टन एसएसपी खाद पहले ही चण्डीगढ़ पहुंच चुकी है, जिसकी टेस्टिंग का कार्य लगभग पूरा कर लिया गया है और शीघ्र ही इसे बागबानों को वितरित कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पोटाश खाद की 5000 मीट्रिक टन की मांग के अनुसार 4300 मीट्रिक टन का वितरण बागबानों को कर दिया गया है।

श्री बरागटा ने बागबानों से सेब के पौधे प्रमाणित एवं पंजीकृत नर्सरियों से लेने का आग्रह किया। उन्होंने बागबानी विभाग को अनाधिकृत तौर पर बेचे जा रहे सेब के पौधों पर कड़ी नजर रखने के निर्देश दिए। इसकी जांच के लिए एक जांच दल पहले ही गठित किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 14 लाख के पौधों की मांग है, जबकि विभाग के पास बागबानी विश्वविद्यालय, सरकारी एवं निजी पंजीकृत नर्सरियों में 45 लाख पौधों का स्टाक है, जिसे शीघ्र ही बागबानों को उपलब्ध करवा दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि मांग के अनुरूप और पौधे भी उपलब्ध करवाए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि बागबानी विभाग द्वारा शिमला जिले में बागबानी प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बागबानी विश्वविद्यालय नौणी के वैज्ञानिकों के सहयोग से बागबानों को उन्नत खेती व आधुनिक तकनीक की जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है।

कृषि विभाग के निदेशक डॉ. जे. सी. राणा, बागवानी विभाग के निदेशक डॉ. गुरदेव सिंह, हिमफैड के प्रबंध निदेशक कैप्टन जे.एम.पठानिया तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी बैठक में उपस्थित थे।

स्टैंडर्ड यूनिवर्सल कार्टन के उपयोग के लिए कमेटी गठित

राज्य सरकार ने हिमाचल प्रदेश के बागबानी विभाग के निदेशक श्री गुरदेव सिंह की अध्यक्षता में प्रदेश में सेब की पैकिंग में स्टैंडर्ड यूनिवर्सल कार्टन के उपयोग बारे सिफारिशें देने के लिए एक कमेटी का गठन किया है। यह जानकारी गत दिनों एक सरकारी प्रवक्ता ने दी।

प्रवक्ता ने कहा कि एचपीएमसी, हिमफैड व एचपीएसएएमबी के प्रबन्ध निदेशक कमेटी के सरकारी सदस्य होंगे और बागबानी विभाग के वरिष्ठ विपणन अधिकारी इसके सदस्य सचिव होंगे। उन्होंने कहा कि यह कमेटी एक माह के भीतर ग्रेडिंग व पैकिंग आदि से सम्बन्धित स्टैंडर्ड यूनिवर्सल कार्टन के पल्प ट्रे के उपयोग बारे अपनी संस्तुतियां देगी।

प्रकाशकः बी.डी. शर्मा, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः डी.डी. शर्मा, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830378, प्रधान सम्पादकः बी.डी. शर्मा, वरिष्ठ सम्पादकः यादविन्दर सिंह चौहान,
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोन व फैक्सः 2633145, ई-मेलः girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978@yahoo.co.in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)